॥ श्री: ॥

महायक्षिणीसाधनम्

विद्यावारीधि पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत–

हिन्दीटीकासहितम्

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई – ४०० ००४.

भूमिका

अन्य शास्त्रोंकी भांति भारत वर्षमें मंत्रशास्त्रके ग्रंथोंका भी भंडार भर रहा है, जिस प्रकार योगानुष्ठान किये बिना योगशास्त्रकी सिद्धियें आश्चर्य और असंभवसी प्रतीत होती हैं, इसी प्रकार यथोक्त मंत्रानुष्ठान किये बिना मंत्रोंके फल भी अगम्य प्रतीत होते हैं, परन्तु ऐसा होनेसे भी मंत्रशास्त्र निष्फल नहीं हो सकता, कारण कि, इसका पूर्वकालमें अनुष्ठान था और यदि यह निराकथनमात्र होता तो इसके सहस्रों ग्रंथ निर्मित न दीख पडते, जो वस्तु एकवार भी असत्यरूप प्रतीत हो जाती है, उसमें फिर किसीकी आस्था नहीं होती, इससे मंत्रशास्त्रकी बहुतायत देखनेसे ही यह विदित होता है कि, यह किसी कालमें पूर्णरूपसे सफलताको प्राप्त थी, और अब भी कहीं २ मंत्रोंकी स्पष्ट चमत्कारिता दिखाई देती है, पर हां इस समय मंत्र साधनेवाले सिद्ध सुसिद्ध साध्य आदि तिथि नक्षत्र और अपने अधिकार नियमादि पर बिना ध्यान किये समय कुसमय मंत्र जपनेको बैठ जाते हैं, इससे उनको कृतकार्यतामें बाधा पड़ती है, एक मुख्य बातकी यह भी बड़ी कसर रह जाती है कि, वे किसी अनुष्ठानी मंत्रशास्त्र ज्ञाता गुरुसे मंत्रदीक्षा नहीं लेते केवल किसीसे पूंछ करही अपने बैठ जाते हैं, महानिर्वाणतंत्र, नित्यतंत्र, कामतंत्र आदि तंत्रोंमें इनके साधनोंके उपाय लिखे हैं, जिनको यथोक्त करनेसे मंत्री अपने मनोरथको प्राप्त हो सकता है ।

अस्तु, यदि यह सब उपयोगी साधन न मिले तो भी क्या मंत्रशास्त्र उपेक्षा करने योग्य है; कभी नहीं, इसमें बहुतसे सर्वोपकारी प्रयोग ऐसे होते हैं कि सहज में ही वह फलीभूत होते हैं और किसी न किसीको सब साधन भी प्राप्त हो ही जाते हैं, और फलते भी हैं कारण कि, मंत्रोंके प्रयोगकी यह कोई नई विधि नहीं है, पूर्वकालमें वेदके मंत्रोंद्वारा ही प्रयोग होता था, शौनककृत ऋग्विधान इसका प्रमाण देता है तथा अथर्वमें भी कितने ही प्रयोग दीखते हैं । वेदके सिवाय और जो मंत्रशास्त्रोंमें मंत्र दीखते हैं वे भी सिद्ध महात्माओंके रचित हैं जिनकी वाणी सिद्ध थी इस कारण जितने ग्रंथ इस शास्त्रके मिले सबका संरक्षण और प्रकाश करना अत्यन्त उचित कारण कि, यह सिद्धियोंसे भरे हुए हैं ।

आज हम जिस ग्रंथके विषयमें कुछ कहना चाहते हैं यह महायक्षिणी साधन ग्रंथ किसी एक महात्मापुरुषका रचित नहीं है किन्तु क्रमरहित अनेक प्रसिद्ध और

अप्रसिद्ध ग्रंथोंसे संगृहीत तथा नानादेशीय भाषाओंके मंत्रोंसे संयुक्त है, एक २ विषयके मंत्र कई स्थलोंपर आ गये हैं, यद्यपि क्रममें त्रुटि है तथापि इसमें प्रयोजनीय सभी विषय सन्निविष्ट हुए हैं, और प्रायः सम्पूर्ण यक्षिणियोंका साधन भी इसमें आ गया है कितने ही इसके मंत्र ऐसे हैं जो पढनेसे मनपर प्रभाव प्रगट करते हैं।

यह ग्रंथ इंदौरनिवासी श्रीयुत गंगासहाय यमुनालालमहोदयका लिखा हुआ जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" यंत्रालयाध्यक्ष सेठजी श्रीखेमराज श्रीकृष्णदासजी महोदयके निकट प्रकाश करनेको भेजा था परन्तु यह लिखी हुई पुस्तक बहुत ही अशुद्ध तथा नानादेशीय भाषाओंसे मिश्रित होनेसे सर्वसाधारणके समझनेके अयोग्य थी, इस कारण–श्रीमान् सेठजी महोदयकी प्रेरणासे मैंने इसको भली प्रकार शुद्ध करके जितने स्थल इसके संस्कृतमें थे उन सबका भाषाटीका भी कर दिया है, और भाषा भी सर्वसाधारणके समझने योग्य कर दी है, परन्तु जो दो चार मंत्र मारवाडी तथा मरहठी भाषाके थे उनको उसी प्रकार रहने दिया है कारण कि, मंत्र की वाणी जैसी जिस महात्माके मुखसे निकली है उसका प्रभाव उन्हीं शब्दोंमें होता है। वीर भद्रतंत्रके भी इसमें बहुतसे मंत्र हैं जहां कहीं वीरभद्रतंत्रके मंत्रोंमें और इसके मंत्रोंमें कुछ भेद देखा है, वहां (वा) लिखकर पाठ भेद भी लिख दिया है और संस्कृतके सब शुद्धमंत्र लिख दिये हैं; इस प्रकारसे यह पुस्तक सब प्रकारसे ठीक कर दी गई है तो भी यदि कहीं अशुद्धि दीखै तो पाठक महाशय कृपा कर उसे सुधारलें कारण कि भूलना मनुष्यका स्वभाव है।

गुणिजनमण्डलीमण्डन सज्जनमनरंजन परोपकारी शास्त्रप्रचारी नागरीहितकारी सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महाशयके करकमलमें यह ग्रंथ समर्पित है।

अनुगृहीत–पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र, दीनदारपुरा–मुरादाबाद.

श्रीः

अथ महायक्षिणीसाधनकी विषयानुक्रमणिका

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.

विषयानुक्रमणिका

इत्यनुक्रमणिका समाप्त

अथ

महायक्षिणीसाधनम् ।

हिन्दीटीकासहितम् ।

टीकाकारकृतमङ्गलाचरणम् ।

॥ आनंदरूपं जगदेकवन्द्यं गौरीपतिं सिद्धिकरं गुणाढ्यम् ॥ वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शिरसा नमामि ॥ १ ॥

दोहा ।

शंभुशिवापद हिय सुमिरि, बुध ज्वालाप्रसाद ।
भाषाटीका करि कहत, हरगौरीसंवाद ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच।

देवदेव जगन्नाथ कृपया तं विधिं वद ॥
नानामन्त्रैर्वैदिकैर्वाप्यागमैर्यो विधीयते ॥ १ ॥
सर्वे निःश्रेयसं यान्ति कलौ वीर्यविवर्द्धनम् ॥
यस्य च स्मरणात्सिद्धिस्तन्मे ब्रूहि महेश्वर ॥

ईश्वर उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गोप्यं गोप्यतरं महत् ॥
यक्षिणीनां प्रयोगं च वक्ष्ये साधकसिद्धिदम् ॥ २ ॥

भाषार्थः-पार्वती कहने लगी हे देव! आप कृपा करके उस विधिको कहिये जो वेद शास्त्रोंके मंत्रोंमें अनेक प्रकारसे कही है ॥१॥ जिससे सब साधकोंका कल्याण और वीर्यकी वृद्धि हो, हे महेश्वर! कलियुगमें जिसके स्मरणमात्रसे सिद्धी हो वह आप मुझसे कहो ॥ २ ॥ ईश्वर बोले सुनो देवि! मैं बडी गुप्त बातको कहता हूँ साधकको सिद्धि देनेवाला यक्षिणीसाधन कहता हूं ॥ ३ ॥ १ ॥

अथ भोगयक्षिणीप्रयोगः।

ॐ नमो आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा। यह बारह अक्षरका मंत्र है। स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहर ६०००० जप करै पंचखाद्य (मेवा) का दशांश हवन और उसका दशांश दर्पण करै, पुरश्चरणकी पूर्ति तक भूमिमें शयन करै वाणीको रोकै लघु दूध भातका भोजन करै तो देवी सिद्ध होकर सोनेके टके नित्य देती है। इ० भो० १। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः॥ यह छः अक्षरका मंत्र है इसका बीस सहस्र जप करै नैवेद्य गरम दूध खीरसे दशांशहवन करै तो देवी प्रसन्न हो भोग देती है। भूत प्रेत

पिशाचादि उसकी सेवा करते हैं। इति भो० य० प्रयोगः २। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ।। यह धनदायक्षिणीमंत्र १२५००० जपनेसे देवी धन देती है ॥ ३ ॥ २॥

अथ श्मशानयक्षिणीमंत्रः।

ॐ क्लीं भगवतीभ्यो नमः ॥ यह नौ अक्षरका मन्त्र है अथवा ॐ ह्रूं ह्रीं स्फूं श्मशाने वासिनी श्मशाने स्वाहा॥ श्मशानमें बैठ नंगा हो बाल खोल कर ९०००० जप करै तो प्रसन्न हो देवी वस्त्र देती है जिसके धारणसे अदृश्य होता है। २ नौ अक्षरकामंत्र ५०००० जप करे मद्यके ३ रीते घडे रख छोडै उनमें भोजन करै तो देवी सिद्ध होकर तीनलोककी बात कानमें कहती है और अनेक फूल फल बीज साधकको लाकर देती है । इति श्मशानयक्षिणीप्रयोगः ।। ३ ।।

अथ वशीकरणयक्षिणीमन्त्रः ।

ॐद्वारदेवतायै ह्रीं स्वाहा ।। दशाक्षरो मंत्रः । इसका २६००० जप नदीके किनारे पवित्र होकर करै दशांश गूगल और घीका हवन करै तो देवी प्रसन्न होय, हवन-की भस्मको जिस स्त्रीके लगाओ सो वशीभूत होय ।।४।।

अथ बंधमोचनयक्षिणीमन्त्रः ।

ॐनमोहटेलेकुमारी स्वाहा ॥ एकादशाक्षरो मंत्रः । सात दिनतक बंधनवाला इसका नित्य दो सहस्र जप करै तो मुक्त होय, दशांश दूध घृतका हवन करै, एक कुमारीको पंचखाद्य वस्तुओंसे भोजन करावै तो देवी प्रसन्न होय ॥ ५ ॥

अथ अदृष्टकरणयक्षिणीमन्त्रः ।

ॐकनकवती करवीरके स्वाहा । त्रयोदशाशरो मंत्रः। कृष्णपक्षकी अष्टमीसे लेकर अमावास्यापर्यन्त नित्य तीन सहस्र जप करना दशांश कडवी नीमकी समिधाओंसे हवन करना, हवनकी सामग्री घृत है उस भस्मका तिलक करै तो अदृश्य होय ॥ ६ ॥

अथ विद्यायक्षिणीप्रयोगः ।

ॐह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा । नवाक्षरो मंत्रः। २५००० सहस्र जप करे दशांश पंचमेवाका हवन करै तो मंत्र सिद्ध होय ॥ ७ ॥

अथाष्टमहासिद्धियक्षिणीप्रयोगः ।

ॐ क्लीं पद्मावती स्वाहा । अष्टाक्षरो मंत्रः । बारह

लाख १२००००० जप करै पंचखाद्य (मेवा)का दशांश हवन करै अष्ट महासिद्धि प्राप्त होयँ, सम्पूर्ण औषधी उखाडनेका यक्षिणीमंत्र ॐ ह्रीं सर्वते सर्वते श्रीं क्लीं सर्वौषधि प्राणदायिनी नैर्ऋत्यै नमो नमः स्वाहा। यह २८ अक्षरका मंत्र है इससे सर्वौषधि ग्रहण की जाती हैं। ग्रामगमन करनेमें यह मंत्र जपा जाय तो मार्गके सब विघ्न नाश हों और सर्व कार्य सिद्ध होंय। मन्त्र यह है-ॐ नमो-सिद्धविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्नप्रशमनाय सर्वराज-वश्यकरणाय सर्वजनसर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा। यह ५७ अक्षरका मंत्र है प्रतिदिन १०८ वार जपकर जिस कार्यको करै सो कार्य सिद्ध होय ॥ ८ ॥ ९ ॥

अथ भोगयक्षिणीसाधनमन्त्रः ।

ॐ जगत्रयमातृके पद्मनिधे स्वाहा। त्रयोदश अक्षरका मंत्र है २५००० सहस्र जप करे। दशांश पंच खाद्यका हवन करे तो देवता प्रसन्न होय। अन्न जो मांगे सो देती है ॥ १० ॥

अथ सिद्धियक्षिणीप्रयोगः ।

ॐ नानाचरणपद्मावती स्वाहा। यह ग्यारह अक्षरका

मंत्र है । दस लाख जप करनेसे देवता प्रसन्न होते हैं, दशांश घी गूगल और सेवतीके फूलोंका हवन करै तो देवता प्रसन्न होकर नित्य अष्टभोग देते हैं । चावल उर्द भोजनकी वस्तुओंसे कलश भरकर धरै और आप जप करता रहै जब कलश रीता होय देवी प्रसन्न होती है ॥ ११॥

अथ झोटिंगमन्त्रः ।

ॐ नमो देवि दे देखिलीयां असमासासजलेसेन्हे जाउतीजोटिंगापुढेंसांगिलेंतेंघेमजदेनें देसि तरि थारी बहीनीची आनही देवागुरुचीसिद्धिस्वाहा । धोबीकी कन्याको पूजनके स्थानमें बैठावे बकरेके चर्मपर बैठकर इस मंत्रका जप करै इसको पढ अष्टोत्तरसे दशांश पंचखाद्य (पंचमेवा) का प्रतिदिन हवन करै ऐसा सात दिन करै, सातवें दिन देवके निमित्त गुडके पुए करे पंच खाद्यका हवन करै उसकी भभूत एक तावीजमें भर रक्खै जिसपर भभूत डालै वह स्त्री वशमें होय, तावीज धारण करनेसे नाना वस्तु लाकर देती है तावीजको सदा अपने पास रक्खै ॥ १२ ॥

अथ वश्यकरणयक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ नमो सर्वस्त्रीसर्वपुरुषवश्यकारिणी श्रीं ह्रीं स्वाहा ।

इसका ७२००० सहस्र जप है इतने जपसे मन्त्र सिद्ध होता है नारियलका दशांश हवन करै जिसका नाम ले जप करै तो वशीकरण होय। इति वश्यकरणयक्षिणी० ॥ १३

अथ कानमें चेटक यक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ ह्रीं ओं क्लीं नमो मातंगेश्वरी नमः । इस मंत्रको अच्छे मुहूर्तमे ग्रहण करै इसका जप एक लाख है, इतने जपसे देवता प्रसन्न होते हैं दशांश रालका हवन करै इच्छा अन्न देती है ॥ १४ ॥

ॐजीवपातालमर्दने हुं स्वाहा ॥ यह बारह अक्षर-का मंत्र है ५२००० जप करै सेवतीके फूलका दशांश हवन करै यह युद्धमें जय देता है अद्भुत बल हो, घाव नहीं लगै, मार्गमें जाते जप करै तो बहुत चलै ॥१५॥

ॐश्रींकाककमलवर्द्धनेसर्वकार्यसर्वार्थान् देहि २ सर्व-कार्यं कुरु परिचर्य्य सर्वसिद्धिपादुकायां हं क्षं श्रीं द्वादशा-न्नदायिने सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा ६० अक्षरका मंत्र है। इसका १००००० एक लाख जप कर गेहूँ चनेका दशांशहवन करै तो वीरू चेटक प्रसन्न होय, सहस्र गौ और स्त्री जीते अनेक बस्तु लाकर दे, पृथ्वीके मध्यमें

जो फूल फल है उनको लाकर दे स्वर्गकी वस्तु लाकर दे द्वीपोंके अन्न और वस्त्र लाकर दे तथा और भी अनेक वस्तु प्रार्थना करनेसे देती है। बुलानेसे बहुत शीघ्र आती है और वस्तु लाती है ॥ १६ ॥

ॐ सिद्धिरक्तचामुण्डे घुरं घुरं अमुकीं वशमानय स्वाहा । इस मंत्रसे सहस्र गुडहलके फूलोंसे हवन करै तो राजा वशमें होय, और सहस्र कनेरके फूलोंसे हवन करे तो सर्व लोक वशमें होयँ, यह मंत्र बडा प्रतापवाला है और जो कपूरके सहित सहस्र फूल सेवतीके होमें तो द्रव्य प्राप्ति होय, सहस्र जुहीके फूल होमें तो पुत्र प्राप्ति होय, स्त्रीका नाम लेकर हवन करै, सहस्र सेमलके फूल हवन करनेसे शत्रुकी मुत्यु और उच्चाटन होय, सहस्र निवारी-के फूल होम करे तो शत्रुका नाश होय सहस्र कमलोंसे हवन करे तो अकालमें मेघ होय, सहस्र कचनार के फूलोंसे हवन करे तो और अमुकरोगीका रोग नाश हो ऐसा नाम लेकर हवन करे तो रोगीका महारोग नाश हो । सहस्र अलसीके फूलोंसे होम करे तो सबकी वृद्धि हो, मूगराके सहस्र फूलोंसे होम करे तो सुभिक्ष हो मेघ वर्षे । इति होमविधिः ॥ १७ ॥

अथ गणपतिचेटकमन्त्रः ।

ॐ ग्रीं ग्रूं गणपतये नमः स्वाहा । इसका एक लाख-जप है इसके जपमें पवित्र और ब्रह्मचारी होकर पृथ्वीमें शयन करना होता है, दशांश पंचखाद्य (पंचमेवा) का होम करे तो मंत्र सिद्ध होय रिद्धि सिद्धि प्राप्त होती है विघ्न दूर होते हैं ॥ १८ ॥

ॐनमो पिङ्गले चपले नानापशुमोहिनी स्वाहा । एकोनविंशाक्षरो मंत्रः । यह १९ अक्षरका मंत्र है । मध्याह्नादूर्ध्वं सायंकाले पंचशतसहस्रं जपेत् अपक्वमेषस्य वा कुक्कुटस्य गुह्यं दशांशेन जुहुयात्ततः देवी प्रसीदति ।

अर्थः-मध्याह्नके उपरान्त इसका जप करे ५००००० बालमेष और कुक्कुटके गुह्यं स्थलका दशांश हवन करें तो देवी प्रसन्न होती है । करंज, शल्लकी, कंकोल, पाटल यह सब वस्तु रख देवीकी प्रार्थना करे तो देवी आती है उससे सारी रात भोग करे स्थित न रहे तब प्रसन्न रहती है ॥ १९ ॥

ॐ नमो महामाया महाभोगदायिनी हुं स्वाहा चतुर्दशाक्षरो मंत्रः पंचसहस्रं जपेत् । स्वयं मिष्टान्नं भुञ्जीत

स्त्रियं पूजयेत् । पंचखाद्यघृतगोस्तनफलैर्दशांशं जुहुयात् तदा देवता प्रसीदति वरं ददाति स्वः स्त्रियः वा सर्वाः स्त्रियः वशीभवन्तिरुषोराजमान्यो जायते; वशी भवति भूपतिः मुद्रापंचकमात्रं प्रयच्छति अलंकाराणि प्रयच्छति ॥ इति भोगमातृकायक्षिणीप्रयोगः ।

अर्थ–यह मंत्र पांच सहस्र जपै स्वयं मिष्टान्न भोजन करे स्त्रियोंका पूजन करे पंचखाद्य घी और मुनक्काओंका दशांश हवन करे तो देवी प्रसन्न हो वर देती है, अपनी स्त्री व सब स्त्री वशीभूत होती हैं वह पुरुष राजमान्य वशमें करनेवाला होता है राजा उसको पांचमुद्रा प्रतिदिन देता है, अलंकार देता है इति भो० मा० प्रयोगः ॥ २० ॥

ॐजगत्त्रयमातृके पद्मनिभे स्वाहा। चतुर्दशाक्षरो मंत्रः स्नातो वा शुचिर्वा उपविष्टो वा शयानो वा गच्छन्वा ह्युच्छिष्टो वा पंचविंशतिसहस्र जपेत् । देवी प्रसीदति अन्नपानवासांसि पूरयति ॥

अर्थः–न्हाये हो पवित्र वा अपवित्र हो बैठते लेटते जाते समय वा उच्छिष्ट अवस्थामें इस मंत्रको बीस सहस्र जपै तब देवी प्रसन्न होकर अन्न वस्त्रसे परिपूर्ण करती है ॥ इति उच्छिष्टयक्षिणीप्रयोगः ॥ २१ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ॥ षडक्षरो मंत्रः अश्वत्थ-वृक्षस्य अधो गत्वा द्वात्रिंशत्सहस्त्रं जपेत् सघृतपयो देव्यै नैवेद्यं दत्त्वा सिद्धिर्भवति भूतप्रेतपिशाचा वशीभवंति सेवां प्रकुर्वन्ति, पिशाचयक्षाणामाधिपत्यं भवति।

अर्थः—यह छः अक्षरका मंत्र पीपलके नीचे जाकर ३२ सहस्त्र जपे घी दूधका देवीको नैवेद्य दे तो सिद्धि होगी, भूत प्रेत पिशाचादि वशीभूत होते हैं सेवा करते हैं पिशाच यक्षोंका आधिपत्य उसको प्राप्त होता है ॥२२॥

ॐनमो ज्वालामाणिक्यभूषणायै नमः। त्रयोदशाक्षरो मंत्र। स्वगृहद्वारवेदिकायामुपविश्य रात्रौ पंचदशशतं जपेत् एवं कृत्वा दशदिनानन्तरं प्रसीदति क्षीरदधिघृत-कदलीफलानि प्रार्थिता ददाति। इति क्षीरार्णवा यक्षिणी॥

अर्थः-यह तेरह अक्षरका मंत्र है, अपने घरके द्वार-की वेदिकामें बैठकर रातको १५ सौ जप करे ऐसा कर-नेसे देवी प्रसन्न होती है घी दही दूधके सहित प्रार्थना करनेसे केलेकी फली देती है॥ इति क्षी० प्रयोगः॥२३॥

ॐ नमो मातंगेश्वर्यै नमः। दशाक्षरो मंत्रः।श्मशाने ह्युपविश्य तत्रस्थभस्मोद्धूलनं सर्वांगे कृत्वा पंचत्रिंशत्सहस्त्रं

जपेत् । सुगंधितद्रव्यदानेन देवी प्रसीदति दशसहस्रपोषकमन्नं प्रतिदिनं ददाति । इत्यन्नपूर्णायक्षिणी ।

अर्थः-यह दश अक्षरका मंत्र है श्मशानमें बैठ वहां की धूरि सर्वांगमें लेपन कर ३५००० सहस्रजप करै, सुगंधित द्रव्यका दान करनेसे देवी प्रसन्न होती है, दश सहस्रके पोषणयोग्य अन्न प्रतिदिन देती है ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं मातङ्गेश्वर्यै नमो नमः । त्रयोदशाक्षरो मंत्रः । स्वगृहे दीपकसम्मुखे स्थित्वा लक्षमेकं जपेत् सर्जरालस्य तद्दशांशं हवनं कुर्यात् तदा देवी प्रसीदति। स्त्रीभावे कलत्रराजलक्ष्मीमहिष्यादि ददाति अश्वादयः सिद्धयो भवन्ति ॥

ॐक्रीं भगवतीभ्यो नमः ॥ नवाक्षरो मंत्रः । स्वयं पात्रत्रयंकृत्वादेवीप्रसीदति त्रैलोक्यवार्तां कथयति पर्णपुष्पाण्यानीय ददाति । इति श्मशानयक्षिणी ॥

अर्थः-ॐ ह्रीं इत्यादि यह तेरह अक्षरका मंत्र है अपने घर दीपकके सन्मुख बैठकर यह मंत्र एक लाख जपै रालकादशांश हवन करे तो देवी प्रसन्न होकर स्त्रीभावमें स्त्री राजलक्ष्मी महिषीके समूह देती है अश्वादिकी प्राप्तरूप सिद्धियें होती हैं ॥ २५ ॥

ॐक्रीं यह नौ अक्षरका मंत्र है स्वयं तीन पात्र रख-कर जपे तो देवी प्रसन्न होती है त्रिलोकीकी बात कहती और पर्णपुष्प लाकर देती है । इति श्मशानयक्षिणी-प्रयोगः ॥ २६ ॥

अथ चेटकः ॥ ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॥ नवाक्षरो मंत्रः ॥ चत्वारिंशत्सहस्रं जपेत् दशांशगोधूमस्य हवनं कुर्यात् । अहन्यहन्यष्टादशधान्यानि प्रयच्छति । इति धान्यचेटकः ॥

ॐ नमो हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने क्रां क्रीं ह्रां घे घे उच्छिष्ट स्वाहा ॥ त्रिंशदक्षरो मंत्रः कटुनिम्बमूलस्य पर्वमानां गणेशप्रतिमां कृत्वा कृष्णाष्ट-मीमारभ्यामावस्यापर्यन्तं पञ्चशतसंख्याकं जपं प्रतिदिनं कुर्यात् स्वयमुच्छिष्टमुखो धृत्वागणेशाग्रे स्थाल्यां रक्तचंद-नाक्षतपुष्पाणि धृत्वा तमभ्यर्च्य स्वोच्छिष्टमुखेन जपः कर्तव्यः एवं दिमसप्तकं कृत्वाष्टमे दिवसे स्वयमुच्छिष्टमुखं भूत्वैव पंचखाद्येन पंचशतं जुहुयात् ततोभिलषितं ददाति महिमा भवति, अभिलषितबालामुपरि गणेशं संस्थाप्य-प्रत्यहमष्टोत्तरशतं जपेत् दिनत्रयादाकर्षयति । तं गणेशं

तत्कपालेसंस्थाप्य सा पुनर्गच्छति, पुनरानयनायाष्टोत्तर-शतं जपेत् यदि सा पुनर्नायाति तर्हि तं गणेशमुच्छिष्टं मुखाग्रे निधायाष्टोत्तरशतं जपेत् राजा वशीभवति तं गणेशं नद्यां नीत्वा प्रक्षाल्य स्वमुखाद्वारचतुष्टयं प्रक्षाल्य तस्मा-त्पतितंकिंचिदुदकं भांडे निक्षिपेत् तदुदकं ये पिबन्ति ते सर्वे वशीभवन्ति ।

अर्थ—अथ चेटक ॐ नमो भैरवायेति, यह नौ अक्षरका मंत्र है ४० हजार जपै दशांश गेहूँका हवन करै तो दिन २ अठारह प्रकारके धान्य प्राप्त होते हैं ॥ इति धान्यचेटकः ॥ २७ ॥

ॐ नमो हस्तिमुखायेति यह तीस अक्षरका मंत्र है कडवे नीमकी जडके खण्ड लाकर एक अंगुलकी गणेशकी प्रतिमा बनाय किसी महीनेकी कृष्ण पक्षकी अष्टमीसे आरंभ करके अमावसतक ५ सौ जप प्रतिदिन करै और स्वयं जूठे मुख होकर गणेशजीके आगे एक थालीमें लाल चन्दन पुष्प अक्षत धरके उनकी पूजा कर जूठे मुखसे जप प्रारंभ करै इस प्रकार सात दिन करके आठवें दिनमें जूठे मुखहीसे पंचखाद्य वस्तुओंकी ५ सौ आहुती दे तब

गणेशजी अभिलषित वस्तु देते हैं उस पुरुषकी महिमा होती है, जिस स्त्रीकी इच्छा हो उसपर गणेश बैठाय अर्थात् उसकी प्रतिमापर गणेशजीको बैठाकर प्रतिदिन १०८ जप करे तो तीन दिनमें उसका आकर्षण हो जाता है, गणेशको उठा देनेसे वह फिर चली जायगी, फिर बुलानेके लिये १०८ जप करै यदि वह फिर न आवे तो गणेशको उच्छिष्टमुखसे आगे रखकर १०८जपे राजा वशीभूत होता है। गणेशको नदीमें ले जाकर प्रक्षालन कर फिर अपने मुखसे चार वार प्रक्षालन कर उस गिरे जलमेंसे कुछ पानी घडेमें रख ले उस जलको जो पीते हैं वे सब वशीभूत होते हैं॥

तं गणेशं द्वारे तरुवरशाखायां निक्षिप्य संपूज्योष्टोत्तरशतं जपेत् गृहे ह्यखण्डितमन्नं भवति तं गणेशं ताम्रे रौप्ये वा निक्षिप्य कटिबंधनात् स्त्रियो वशीभवन्ति। शत्रुगणाः स्तंभीभवन्ति। तं गणेशे करतले धृत्वा कनकपुष्पैरर्चयेत् पश्चात् करेण करवाले धृते सति संग्रामे जयो भवति दशशतं जयति, तं गणेशमन्त्रोपरि संस्थाप्याष्टोत्तरशतं जपेदुदरपूरणार्थमन्नं मिलिष्यति। तं गणेशं

पाणौ प्रक्षाल्य तदुदकपानाच्छत्रुनामग्रहणात् रिपुनाशः स्यात् इति उच्छिष्टगणपतिचेटकः ॥ २८ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं विटपाय स्वाहा । द्वादशाक्षरो मंत्रः । प्रथमं चेटकस्य नाम गृहीत्वा ततो गृहमध्ये उपविश्य पंचशतसहस्रं जपेत् ततः सिद्धिर्भवति । बालारमणसमये ह्यष्टाविंशतिवारंजपेत्कामोद्दीपनं भवति स्त्री द्रवति वशी भवति ॥ इति रतिराजचेटकः ॥ २९ ॥

ॐ नमो भूतनाथाय नमः मम सर्वसिद्धिर्देहि देहि श्रीं क्लीं स्वाहा ॥ पंचविंशत्यक्षरो मंत्रः । अश्वत्थवृक्ष स्याधः उपविश्य पंचलक्षं जपेत् तद्दशांशपलाशसमिद्भिः शुद्धघृतं जुहुयाद्दशकपालिभ्यस्तृप्तिपूर्वकमन्नं देयं ततः प्रसन्नो भूत्वा प्रार्थितं ददाति खर्जूरचणकनारिकेलद्राक्षाफलान्यनेकानि प्रार्थितो ददाति ॥ ३० ॥ इति नानासिद्धिचेटकाः । ॐ स्वाधिष्ठानमणिपूरदहनाय रुद्ररूपिणे स्वाहा ॥ विंशत्यक्षरो मंत्रः । द्वादशसहस्रं जपेत् सिद्धिर्भवति । एवं सिद्धे सति सिद्धो हवनभस्म निमंत्र्य यस्य गृहोपरि फूत्कुर्यात् तत् क्षणं दहति, अरेरुच्चाटनं स्यात् । इत्यग्निचेटकमंत्रः ॥ ३१ ॥

अर्थः उन गणेशको द्वारेमें अच्छे वृक्षकी शाखामें रखकर पूजन कर १०९ मंत्र जपै तो घरमें अखण्डित अन्न होता है और उन गणेशको तांबा चांदीके तावीजमें रख कमरमें बांधनेसे स्त्री वशीभूत होती है, शत्रुगण स्तंभित होते हैं और उन गणेशको हाथमें रख तलवारसे संग्राम करने जाय तो विजयी होता है १ हजार को जीतता है, जो गणेशको किसी अन्नपर स्थापन कर १०८ जपै तो उदर पूरणार्थ अन्न मिलै और इन गणेशको हाथमें धोय उस जलका पान करे शत्रुका नाम लेता जाय तो शत्रुनाश हो, यह उच्छिष्ट विनायक चेटक है ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं इत्यादि यह बारह अक्षरका मंत्र है। पहले चेटकका नाम ग्रहणकर घरमें बैठ पांचलाख जपै सिद्धि होती है बालारमणके समय २८ बार जपनेसे कामो-द्दीपन होता है स्त्री द्रवती और वशमें होती है ॥ इति रतिराजचेटकः ॥ २९ ॥

ॐ नमः इति यह पचीस अक्षरका मंत्र है पीपलके नीचे बैठ पांच लाख जपै इसका दशांश पलाशसमिधा और शुद्ध घीसे हवन करै दश कपालियोंको तृप्तिपूर्वक

जिमावे तो प्रसन्न होकर मनवांछित देता है खजूर चना नारियल दाख आदि अनेक प्रकारके फल मांगनेसे देता है यह नाना सिद्धि चेटक है ॥ ३० ॥

ॐ स्वाधिष्ठानम् ॥ यह बीस अक्षरका मंत्र है बारह सहस्र जपनेसे सिद्धि होती है, दशांश हवन कर उसकी भस्मको मंत्र पढ जिसके घरपर डालै वह नष्ट होता है शत्रुका उच्चाटन होता है यह अग्नि चेटक है ॥ ३१ ॥

यक्षिणीप्रयोगः ।

माहेन्द्री दुलुकुलुहंसः स्वाहा॥ उपवास कर इंद्रधनुषके उदयकालसे निर्गुण्डीके वृक्षके नीचे एकलाख जपै दशांश हवन करै तो माहेन्द्रीदेवी पातालसे सिद्धि लाकर देती है, भेंट भोग लगाती है । इति माहेन्द्रयक्षिणीमंत्र ॥ १ ॥

अथ शंखिनीयक्षिणीमंत्रः ।

ॐ शंखधारिणी शंखाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीं स्वाहा । इसको वटके नीचे एक लाख जप करै अथवा सूर्य उदयसे १०००० जप करै शंखमल्लिकाके फूलोंसे घृतके सहित दशांश हवन करे तो पांच दीनार और प्रार्थित वस्तु रोज देती है ॥ २ ॥

चन्द्रिकायक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः स्वाहा । यह मंत्र शुक्ल पक्षकी चांदनीमें एक लाख जपे तो यक्षिणी देवी अमृत देती है॥ ३॥

मदनमेखलायक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ ह्रूं मदनमेखले नमः स्वाहा । इस मंत्रको मधु-वृक्षके नीचे १४ दिन एक लाख जपे तो मदनमेखला प्रसन्न होकर अंजन देती है ॥ ४ ॥

विकलायक्षिणीमन्त्रः

ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा । तीन महीने इस मन्त्रको घरमें स्थित होकर एक लाख जपे और कनेर-के फूलोंका घृतके सहित दशांश हवन करे अथवा सुरा-धान्यका दशांश होम करे तो सिद्धि देती है ॥ ५ ॥

ॐ ऐं लक्ष्मी वं श्रीकमलधारिणी हंसः स्वाहा । इसका अपने घरमें एक लाख जप करे कनेरपुष्प और घृतका दशांश हवन करे तो लक्ष्मीयक्षिणी रसायन देती है ॥६॥

मानिनीयक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ ऐं मानिनी ह्रीं एह्येहि सुन्दरि हसहसमिह संग-मह स्वाहा । इसको चौराहेमें स्थित होकर सवालाख जपे

लाल कमलोंका दशांश घीके साथ हवन करै तब मानि-
नीसिद्ध होकर दिव्य खण्ड देती है जिससे यह खण्ड
राज्य पाता है, लाल फूल और घीके दशांश होमसे
खड्ग देती है जिससे राज्य पाता है ॥ ७ ॥

ॐ ह्रां शतपत्रिके ह्रीं ह्रीं श्रीं स्वाहा । शतपत्रिणी
यक्षिणीका मंत्र कमलके समीप एक लाख जपे वा सेव-
तीके वनमें एक लाख जपकर पुये घीका दशांश होम
करै तो दिव्य रसायन देती है ॥ ८ ॥

ॐ क्लीं सुलोचनाद्विदेवी स्वाहा । इस मंत्रको नदीके
किनारे तीन लाख जपे तो देवी प्रसन्न होकर दो पादुका
देती है जिनपर चढ़कर पृथ्वीमें मनोवेगके समान गमन
कर सकता है ॥ इति सुलोच० ॥९॥

अथ विलासिनीमन्त्रः ।

ॐवरुजाक्षविलासिनी आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे
भव प्रियामे भव क्लीं स्वाहा । नदीके किनारे इस मंत्रको
५ हजार जपे घृत गूगलका दशांश होम करे तो देवी
सौभाग्य देती है ॥ १० ॥

नटीयक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ ह्रीं नटि महानाटि स्वरूपवती स्वाहा । पूर्णिमाको

अशोकवृक्षके नीचे जाय वहां चन्दनसे सुन्दर मंडल बनाय देवीकी पूजा करे धूप दे एक महीनेतक सहस्र मंत्र जपता रहे रातको भोजन करे फिर पूजा कर आधी रातको जप करे तो नटी देवी आकर निधि रस और अंजन देती है यह सब दिव्ययोग देती है इसमें चन्दनकी माला बनावे ॥ ११ ॥

अथ कामेश्वरीमन्त्रः ।

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ कामेश्वरी स्वाहा ॥ एकासनमें पवित्र होकर तीनों संध्याओंमें एक २ सहस्र मंत्र जपै और फिर पुष्प धूप दीप नैवेद्यसे रात्रिको प्रसन्नतासे देवीको पूजकर मंत्र जपै प्रसन्न रहै तब देवी आधी रातको आकर दिव्यरस रसायन देती है ॥ १२ ॥

स्वर्णरेखायक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ वर्करशाल्मले सुवर्णरेखे स्वाहा ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं: ह्रः स्वाहा । एकलिंग महादेवको प्रेमसे षडङ्ग विधिसे पूजन करके पूर्व सन्ध्यासे आरंभ करकें कृष्णपक्षतक मंत्र जपै १ महीने भरतक जपता रहै अन्तमें रात्रिको भोजन करै तब आधीरात को आकर देवी अलंकारादि प्रदान

करती है। छः महीने पूजन करने से दिव्य देह कर देती है। ह्रां इत्यादिसे हृदयादिन्यास करै ॥१३॥

सुरसुन्दरीमन्त्रः।

ॐ ह्रीं आगच्छ २ सुरसुन्दरी स्वाहा। एकलिंग महादेवके समीप जाय मिष्ट गूगल घृतका हवन करै तीनों संध्याओंमें नित्य तीन सहस्र जप करै तो एक महीनेमें सुरसुन्दरी यक्षिणी आती है उसे अर्घ देकर प्रणाम करै जब वह कहै क्या इच्छा है तब कहै "देवि दारिद्र्यदग्धोस्मि तन्मे नाशय सत्वरम्" हे देवी! दारिद्र्यसे व्याकुल हूं सो तुम मेरा दारिद्र्य शीघ्र नाश करो तब वह प्रसन्न हो उसे निधि और चिरजीवन देती है ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं प्रमोदाय स्वाहा। यह मंत्र रात्रिको उठकर एक महीनेतक प्रतिदिन एक सहस्र जपै तो देवी निधि देती है। इति सुलक्षणायक्षिणीमंत्रः ॥ १५ ॥

अथ अनुरागिणीयक्षिणीमन्त्रः।

ॐ ह्रीं अनुरागिणी मैथुनप्रिये स्वाहा। भोजपत्रमें कुंकुमसे देवीकी मूर्ति लिखै प्रतिपदाके दिनसे आरंभ कर पूर्णिमापर्यन्त तीनों कालमें पूजा करके नित्य तीन सहस्र

मंत्र जपे तो अर्धरात्रमें प्रसन्नमुखीदेवी आती है और नित्य सहस्र दीनार देती है ॥ १६ ॥

अथ पद्मकेशीयक्षिणीमंत्रः ।

ॐ ह्रीं नखकेशी कनकवती स्वाहा। मंत्री गंधर्वके घर जाकर २१ दिनतक देवीकी पूजा करके एक सहस्र मंत्र प्रतिदिन जपै यथाविधि पूजा करै रातको भोजन करै एकचित्त रहै तो आधी रातको आकर देवी कामना पूर्ण करती है ॥ इति पद्मकेशीमंत्रः ॥ १७ ॥

अथ महायक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ ह्रीं महायक्षिणि भामिनि प्रिये स्वाहा। रवि वा सोमवारसे आरंभ कर पहले तीन दिन व्रत करै माला गंध स्नानादि उपचारसे देवीको पूजै ग्रहणमें जप आरंभ करै मुक्तितक जपता रहै तो सिद्धि होती है ॥१८॥

अथ पद्मिनीयक्षिणीमंत्रः ।

ॐ ह्रीं पद्मिनि स्वाहा। स्नानकर पूजाकी सामग्रीकर चन्दन सुगंधिसे मंडल बनावै हाथ प्रमाण मंडलकरके उसमें पद्मिनीकी पूजा करै धूप गूगलकी देकर नित्य एक सहस्र मंत्र जपै फिर एक महीनेतक ऐसा करनेसे

आधीरातको आकर देवी निधि और दिव्य योग देती है इससे पवित्र हो जप करै ॥ १९ ॥

कनकवतीमंत्रः ।

ॐ ह्रीं आगच्छ २ कनकवती स्वाहा। बेल वा वटवृक्षके नीचे चन्दनसे अच्छा मंडल बनाय उसमें नैवेद्यकी कल्पना कर यक्षिणीका पूजन करै शशा मांस दे सात दिनतक एक सहस्र मंत्र जपै तो भगवती आकर उत्तम अंजन देती है जिसके प्रभावसे मंत्री अशंकित निधि दर्शन करता है, इससे पृथ्वीकी निधि दीखती है ॥ २० ॥

अथ रतिप्रियायक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा । शंख लिप्त पट (वस्त्र) के ऊपर गौरवर्ण देवीकी मूर्ति बनावे हाथमें कमल लिये सब अलंकार धारे हो जातीपुष्प और धूप देकर पूजा करै एक सहस्र मंत्र सप्ताह पर्यन्त जपै अर्चा करता रहे तो आधीरातको आकर देवी नित्य प्रति २५ दीनार देती है सब खर्च करदे पास न रक्खै ॥ २१ ॥

अथ मनोहरायक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ ह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा । नदीके किनारे

पवित्र स्थानमें चन्दनसे मंडल बनाय विधिपूर्वक देवीकी पूजा करै सात दिनतक १० हजार मन्त्र जपै तब यह प्रसन्न हो सौ दीनार प्रतिदिन देती है इनको नित्य खर्च करदे रख छोडनेसे क्रोध करके फिर नहीं देती। ध्यान इस प्रकार है। कुरंगनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिम्बाधरां चन्दनगन्धमाल्याम् ॥ चीनांशुकीं पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामकरां विचित्राम्। ध्यायेम शेष है॥२२॥

अथ कालिकादेवीयक्षिणीमंत्रः।

ॐ कालिकादेव्यै स्वाहा। गोशालामें इसको दो लाख जपै दशांश होम घृतके साथ करै मध्य रात्रमें वर देती है ॥ २३ ॥

अथ कर्णपिशाचिनीमंत्रः।

ॐ कर्णपिशाचिनि पिंगललोचने स्वाहा। जपस्थान पूजास्थानमें एक लाख जपै दशांश घृतका होम करै एक समय तिलकी तिलवटी खाय तो देवी कर्णपिशाचिनी प्रसन्न होकर तीन लोककी बात कहती है पातालका द्रव्य दिखा देती है तत्काल लोककी बात कहती है ॥२४॥

अथ नृसिंहमंत्रः ।

ॐ नमः श्रीनारसिंहाय मानभद्राय शोषाय वीर पहरे चीर क्षीर नाव पन वेग आवपाटवी पुंजाय ठःठः स्वाहा । सब जिनसका होम करे, शुद्धतीर्थमें होम करे, खोपरा नैवेद्य, अंधेरी चौदस अथवा दिवाली अथवा नौरात्रको १२००० होम करे जितनी वस्तु होमें उतनीही लाकर देता है परन्तु आप उनमेंसे न खाय ॥ २५ ॥

सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात्समाहितः ॥ भगिनीमातृपुत्रीस्त्रीरूपतुल्या यथेप्सिताः ॥ १ ॥ लक्षमेकं जपन्मंत्रं वटवृक्षतले शुचिः ॥ बंधूककुसुमैः पश्चान्मध्वाज्यक्षीरमिश्रितैः ॥२॥ दशांशं योनिकुंडे तु हुत्वा देवी प्रसीदति ॥ विचित्रा साधकस्यैव प्रयच्छति समीहितम् ॥ ॐ विचित्रे चित्ररूपेण सिद्धिं कुरु २ स्वाहा ॥ ३ ॥ १ ॥

अर्थः—सब यक्षिणियोंका सावधान होकर ध्यान करे भगिनी माता पुत्री स्त्री यथा इच्छित रूपसे ध्यान करे । वटवृक्षके नीचे पवित्र हो एक लाख मंत्र जपे पीछे शहत घृत दूध मिलाय बंधूकके फूलोंसे दशांश योनिकुंडमें हवन करे तो देवी प्रसन्न होती है और साधकको अनेक

विचित्र वस्तु देती है उसका मनोरथ पूरा करती है। ॐ विचित्रेति यह मंत्र है ॥ १ ॥

त्रिपथस्थो जपेन्मंत्रं लक्षमेकं दशांशतः ॥ घृताक्तैर्गुग्गुलैर्होमैर्विचित्रा सिद्धिदा भवेत् ॥ ऐं ह्रीं महानन्दे भीषणे ह्रीं ह्ल॰ स्वाहा ॥ २ ॥

अर्थः—त्रिपथमें स्थित हो लाख एक मंत्र जपै दशांश घी और गूगलका होम करे तो विचित्र सिद्धि देती है। ऐं ह्रीं महानन्दे भीषणे ह्रीं ह्ल॰ स्वाहा यह मंत्र है॥२॥

गत्वा यक्षगृहं मन्त्री नग्नो भूत्वा जपेन्मनुम् ॥ दिनैकविंशतिं कुर्यात्पूजां कृत्वा ततो निशि ॥ आवर्तयेत्ततो मंत्रमेकचित्तेन साधकः ॥ निशार्द्धे वांछितं द्रव्यं देव्यागम्य प्रयच्छति ॥ ॐ ह्रीं नखकेशि कनकवति स्वाहा ॥ ३ ॥

अर्थः—यक्षके घर जाकर मंत्री नंगा होकर २१ दिन मंत्र जपै रातमें पूजा करे और एक चित्तसे साधक मन्त्रको आवर्तन करे तो देवी आधीरात आकर मनवांछित देती है ॐ ह्रीं नखकेशि कनकवति स्वाहा। यह मन्त्र है ॥ ३ ॥

लक्षत्रयं जपेन्मंत्रं दशांशं गुग्गुलं हुनेत् ॥ लाक्षा उत्पलके वाथ ध्यात्वा सर्वाङ्गलोचनाम् ॥ पट्टी-पटे वा संलेख्य होमान्ते चिन्तितप्रदा ॥ ॐ कुवलये हिलि २ तु ३ सिद्धि सिद्धेश्वरी ह्रीं स्वाहा ॥ ४ ॥

अर्थः-नीचे लिखा मंत्र तीन लाख जपै दशांश गूगलका होमलोंका होम करे और लाख कमलोंका होम करै सर्वाङ्गलोचनाको पट्ट वा वस्त्रपर लिखकर होमके अन्तमें ध्यान करे तो मनचिन्तित अर्थ देती है, (ॐ कुवलये) इत्यादि ऊपर लिखा मंत्र है, ॥ ४ ॥

जपेल्लक्षद्वयं मंत्री श्मशाने निर्भयो मनुम् ॥ दशांशं जुहुयात्साज्यं हुत्वा तुष्यति विभ्रमा ॥ पञ्चाशन्मानुषाणां च दत्ते सा भोजनं सदा ॥ ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमे कुरु २ एह्येहि भगवति स्वाहा ॥ ५ ॥

अर्थः-साधक श्मशानमें जाय निर्भय होकर (ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे०) इत्यादि दो लाख मंत्र जपे दशांश घीका हवन करे तो विभ्रमा देवी प्रसन्न होती है पचास मनुष्योंको नित्य भोजन देती है ॥ ५ ॥

शाकयूषपयःसक्तुभक्षः श्वेततमासने ॥ देवतां पूजयेन्नित्यं जपेल्लक्षं त्रयोदशम् ॥ पायशं होमयेत्पश्चात्सहस्रैकेन सिद्धयति ॥ नित्यं लोकसहस्रस्य भोजनं सा प्रयच्छति ॥ लक्षायुर्दिव्यवर्षाणि दत्ते सा शंकरोदिता ॥ ॐ ह्रीं जलपाणिनि ज्वल २ हुं लंु स्वाहा ॥ ६ ॥

अर्थः-शाक यूष दूध सत्तूका भोजन कर श्वेतवस्तुके आसनपर बैठ नित्य देवताका पूजन कर (ॐ ह्रीं जलपाणि०) मूलमें लिखा मंत्र तेरह लाख जपै फिर एक सहस्र खीरका हवन करै तो देवी प्रसन्न होकर नित्य सहस्र पुरुषोंको भोजन देती है, तथा लाख वर्षकी अवस्था देती है यह शंकरने कहा है ॥ ६ ॥

लक्षमुत्पलशाकोत्थं हुत्वा मंत्रमिमं जपेत् । लक्षैकादशमावर्त्य हुत्वा मध्ये शशिग्रहे ॥ अथवा मालती पुष्पैर्हुत्वा भानुसहस्रकम् ॥ भानुमुक्ते भवेद्यावत्पूर्णान्ते सिद्धयति ध्रुवम् ॥ सहस्रं तु जपाद्यन्ते सहस्राणां तु भोजनम् ॥ ॐ भूते सुलोचने लुंं ॥ ७ ॥

अर्थः-लक्षकमलदलका हवन करके (ॐ भूते०) वह मूलमें लिखा मंत्र ग्यारह लाख जपै चन्द्रग्रहणमें हवन करै, अथवा मालतीपुष्पोंसे १२००० जप करै और सूर्यग्रहणमें हवन करै जब सूर्य ग्रहणसे मुक्त हो तबतक मंत्र सिद्ध होता है फिर सहस्रवार जपनेसे सहस्र मनुष्यों को भोजन प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

शंखलिप्ते पटे देवीं गौरवर्णां धृतोत्पलाम् ॥ सर्वालंकारिणीं दिव्यां समालिख्यार्चयेत्पुनः ॥ जातीपुष्पैः सोपचारैः सहस्रैकं ततो जपेत् ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ॥ पंचविंशतिदीनारान्प्रत्यहं सा प्रयच्छति ॥ ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ॥ ८ ॥

अर्थः-शंखमृत्तिकाको पटमें लगाकर उसपर गौरवर्ण हाथमें कमल लिये सब भूषण धारण किये देवीकी मूर्त्ति लिखै जातीके फूलादि चढाकर पूजा करै (ॐ ह्रीं०) यह ऊपर लिखा मंत्र १००० प्रति दिन जपै तो आधीरातमें आकर देवी प्रसन्न हो पच्चीस दीनार प्रतिदिन देती है ॥ ८ ॥

एकविंशतिदिनं यावदुदयास्तमयं जपेत् ॥ नित्यं सायं स्वमाहारपिण्डं हर्म्योपरि क्षिपेत् ॥

अर्थः-इक्कीस दिनतक प्रतिदिन उदयास्तके समय मंत्र जपै और अपने अहारमेंसे एक पिंड संध्याको घरके ऊपर छत्तमें फेंक दे ।

त्रिसप्ताहे तु सा तुष्टा शय्यां गत्वा पिशाचिका ॥ पंचविंशतिदीनारान् ददाति प्रतिवासरम् ॥ कर्णे कथयति क्षिप्रं यद्यत्पृच्छत्यसौ क्रमात् ॥ ॐ ह्रीं चः चः कम्बलके गृह्ण पिण्डं पिशाचिके स्वाहा ॥९॥

अर्थः-तीन सप्ताहमें वह पिशाचिनी शय्यापर आती है और पच्चीस दीनारोंको प्रतिदिन देती है जो जो यह पूछता है वह वह शीघ्र कानमें कहती है । ॐ ह्रीं चः चः० मंत्र है ॥ ९ ॥

गृहे वारण्य एकान्ते लक्षमेकं जपेन्मनुम् ॥ पुष्पधूपादिभिःपूजां नित्यं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ पञ्चामृतैर्दशांशेन हुते देवी प्रसीदति ॥ दीनाराणां सहस्रकं प्रत्यहं तोषिता सती ॥ ॐ गुलु गुलु चन्द्रामृतमयि अवजातिलं हुलु हुलु चन्द्रणि रे स्वाहा ॥ १० ॥

अर्थः-ॐ गुलु २ यह मंत्र घर वा वनमें एक लाख जपै और पुष्प धूपादिसे नित्य पूजा करै, पंचामृतद्वारा दशांश हवन करै तो देवी प्रसन्न होकर प्रतिदिन सहस्र दीनार देती है ॥ १० ॥

एकलिङ्गे महादेवं त्रिसंध्यं पूजयेत्सदा ॥ धूपं दत्त्वा जपेन्मंत्री ब्रूहि सा त्वं किमिच्छसि ॥ देवि दारिद्र्यदग्धोस्मि तन्मे नाशय सत्वरम् ॥ ततो ददाति सा तुष्टा वित्तायुश्चिरजीवितम् ॥ ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ॥ ११ ॥

अर्थः-एकलिंग महादेवको तीनों संध्याओंमें पूजन करै और धूप दे जब कहै कि, तुम क्या इच्छा करते हो तब कहै कि, हे देवि ! मैं दरिद्रतासे दग्ध हो रहा हूं सो मेरा दरिद्र नाश करो, तब यह प्रसन्न होकर धन आयु चिरजीवन देती है, ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसु-न्दरिस्वाहा । यह मंत्र है ॥ ११ ॥

कुंकुमेन समालिख्य भूर्जपत्रे सुलक्षणाम् ॥ प्रति-पत्तिथिमारभ्य पूजां कृत्वा जपेत्ततः ॥ त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रं तु मासान्ते पूजयेन्निशि ॥ सञ्जपन्नर्द्ध-रात्रे तु समागत्य प्रयच्छति ॥ दीनाराणां सहस्रे-

कं प्रत्यहं परितोषिता ॥ ॐ ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ १२ ॥

अर्थः—भोज पत्रपर कुमकुमसे प्रतिमा लिखै और प्रतिपदाके दिनसे पूजन आरंभ करे तीनों काल की संधिमें तीन सहस्र जपकरै रात्रिको पूजन करै ऐसा एक महीना करै तौ आधीरातमें आकर प्रसन्न हो प्रतिदिन सहस्रदीनार देतीहै ॐह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा॥ यह मंत्र है ॥ १२ ॥

नदीतीरे शुभे देशे चन्दनेन सुमंडलम् ॥ विधाय पूजयेद्देवीं ततो मंत्रायुतं जपेत्॥ त्रिसप्ताहं जपेदेवं प्रसन्ने विरतस्तदा ॥ दीनाराणां सहस्रैकं व्यये कुर्याद्दिने दिने॥ विना व्ययेन सा क्रुद्धा न ददाति कदाचन॥ ॐह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा॥१३॥

अर्थ:-नदीके किनारे अच्छेदेशमें चन्दनद्वारा सुन्दर मंडल बनाय देवीकी पूजा कर (ॐह्रीं०) यह मूलका मन्त्र तीन सहस्र जपे तीन सप्ताह तक जपे जब देवी प्रसन्न हो जाय तब जपसे विराम करे तब सहस्र दीनार प्रतिदिन देती है उन्हें प्रतिदिन व्यय करदे अन्यथा वह क्रोधित हो कुछ नहीं देती ॥ १३ ॥

मन्त्रायुतं जपेन्मन्त्री प्रातः सूर्योदये सति ॥ मासमेकं जपेदेवं पूजां कुर्याद्दिने दिने ॥ शुद्धसंलिप्तपट्टे तु शुभ्रपुष्पैः सपायसैः ॥ दशांशं होमयेत्साज्यैरिन्धनैः करवीरकैः ॥ ददाति शंखिनी तुष्टा नित्यं रूप्यकपंचकम्॥ ॐ ह्रीं शंखधारिणि शंखाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं ऐं आं स्वाहा ॥ १४ ॥

अर्थः-(ॐ ह्रीं शंख०) यह मूलका मंत्र प्रभातकाल सूर्योदयमें दस सहस्र जपे इस प्रकार एक महीनेतक करता हुआ दिनदिन पूजा करे शुद्ध पट्टमें मूर्ति बनाय पूजै श्वेत पुष्प और खीरसे पूजे कनेरकी लकड़ी और घीसे दशांश होम करे तो शंखिनी प्रसन्न हो नित्य पांच रुपये देती है ॥ १४ ॥

सहस्राष्टमिमं मंत्रं जपेत्सप्तदिनावधि । प्रत्यहं मणिभद्राख्यं प्रयच्छत्येकरूपकम्॥ॐ नमोमणिभद्राय नमः पूर्णाय नमो महायक्षसेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा ॥ १५ ॥

अर्थः-(ॐ नमो मणिभद्राय०) इस मूल मन्त्रको सात दिनतक आठ सहस्र जपे तो प्रतिदिन मणिभद्र एक रुपया देता है ॥ १५ ॥

चतुर्लक्षमिमं मंत्रं जपेत्त्यागा प्रसीदति॥ ददाति चिन्तितानर्थांस्तस्य भोगाय मंत्रिणः॥ ॐ अहोत्यागि ममत्यागार्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं स्वाहा ॥ १६ ॥

अर्थः-(ॐ अहोत्यागि०) इस मंत्रको चार लाख जपनेसे त्यागा प्रसन्न हो साधकको भोगनेके निमित्त अनेक वस्तु देती है ॥ १६ ॥

रात्रौ रात्रौ जपेन्मंत्रं सागरस्य तटे शुचिः ॥ लक्षजापे कृते सिद्धे दत्ते सागरचेटकः॥ रत्नत्रयं तदा मौल्ये तेन मन्त्री सुखी भवेत्॥ ॐ नमो भगवन्रुद्र देहि रत्नानि जलराशे नमोस्तु ते स्वाहा ॥ १७ ॥

अर्थः-(नमो भगवन्रुद्र०) मंत्र सागरके किनारे प्रत्येक रात्रिको जपनेसे एक लाख जपकी पूर्ति होनेसे सिद्ध होकर सागर चेटक देता है बड़े मोलके तीन रत्न देता है जिससे मंत्री सुखी होता है ॥ १७ ॥

एकान्ते तु शुचौ देशे त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रकम् ॥ मासमेकं जपेन्मन्त्री ततः पूजां समारभेत् ॥ पुष्पधूपादिनैवेद्यैः प्रदीपैर्घृतपूरितैः ॥ रात्रावभ्यर्चयेत्सम्यक्सुस्थिरः सुमनाः सुधीः ॥ अर्द्धरात्रे गते

देवी समागत्य प्रयच्छति ॥ रसं रसायनं दिव्यं वस्त्रालंकारभूषणम् ॥ ॐ ह्रीं आगच्छ स्वामीश्वरि स्वाहा ॥ १८ ॥

अर्थः-(ॐ ह्रीं आगच्छ०) इस मूल मंत्रको एकांत पवित्र देशमें स्थित हो तीनों संध्याओंमें तीन सहस्रजप करे एक महीने जप कर फिर पूजाका आरंभ करे पुष्प धूप दीप नैवेद्य घृत पूरित दीपकसे पूजा करे सुस्थिर होकर निश्चल मनसे रात्रिको पूजन करे तब आधीरातके समय आकर देवी दिव्य रसरसायन वस्त्र और अलंकार देती है ॥ १८ ॥

त्रिपथस्थो वटाधस्थो रात्रौ मन्त्रं जपेत्सदा ॥ लक्षत्रयं तदा सिद्धास्याद्देवी वटयक्षिणी ॥ वस्त्रालंकरणं दिव्यं सिद्धं रसरसायनम् ॥ दिव्याञ्जनं च सा तुष्टा साधकाय प्रयच्छति ॥ ॐ ह्रीं श्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ॥ १९ ॥

(ॐ ह्रीं श्रीं०) इस मूलमंत्रको तिराहेमें वटके नीचे स्थित हो रातमें जपे तीन लाख जपसे वटयक्षिणी देवी

प्रसन्न होती है तब दिव्य वस्त्र अलंकार रस रसायन अंजन यह साधकको प्रदान करती है ॥ १९ ॥

वटवृक्षं समारुह्य लक्षमेकं जपेन्मनुम् ॥ ततः सप्ताभिमंत्रेण कांजिकैः क्षालयेन्मुखम् ॥ यामद्वयं जपेद्रात्रौ वरं यच्छति यक्षिणी ॥ रसं रसायनं दिव्यं क्षुद्रकर्माण्यनेकधा ॥ सिद्धानि सर्वकार्याणि नान्यथाशङ्करोदितम् ॥ ॐ ह्रीं नमश्चन्द्रद्रवे कर्णाकर्णकारणे स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रयोगिने स्वाहा । मन्त्रद्वयस्यैकसिद्धिः॥२०॥

अर्थः-ॐ ह्रीं नमः अथवा ॐ नमो भगवते॰ इन दोनों मन्त्रोंसे किसी एकको वटके वृक्षपर चढकर एक लाख जपे फिर सात वार मन्त्र पढकर कांजीसे मुख धोवे रातमें दो पहरतक जप करे तो वटयक्षिणी दिव्य रस रसायन देकर और भी अनेक क्षुद्र कर्मोंकी सिद्धि देती है । सब कार्य सिद्धि होते हैं यह शंकरका कहा अन्यथा नहीं है ॥ २० ॥

चिञ्चावृक्षतले मन्त्रं लक्षमावर्तयेच्छुचिः ॥ विशाला वितरेत्तुष्टा रसं दिव्यं रसायनम् ॥ ॐ ह्रीं विशालेह्रां ह्रूं क्लीं एह्येहि स्वाहा ॥ २१ ॥

अर्थः-(ॐ ह्रीं) यह मन्त्र इमलीके वृक्षके नीचे एक-लाख जपै तब विशाला प्रसन्न होकर दिव्य रस रसा-यन देती है ॥ २१ ॥

ॐ नमो उच्चेसटे चांडालिनि क्षोभिणि दह दह द्रव द्रव आन पूरी श्रीभास्करी नमः स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐनमो ईश्वर चल ब्रह्मकेशारिरिद्धिसिद्धिदीन्ही हमारे हाथ, भरो भंडार वास करो सुखी रक्षाकर श्रीअन्नपूर्णा ज्वालामुखी चोखा एक ॥ २३ ॥

इसका पहले १०००० जप करै फिर मंत्र २२१२३ जपै ॥

ॐ नमो गुप्तवीरवरमञान सबको ठामानैतेरी आन गंगाकी लहर जमनाको प्रमान । या कोठार राजाका भंडार राजा प्रजा लागै है पांच राती ऋद्धि लाव नव-नाथ, चौरासी सिद्धिका पात्रभरा जोहमारा पात्र भरो न भरो तो पार्वतीका चीर चौधा करो फुरो मंत्र ईश्वरो-वाच मंत्र जप १० हजार ॥२४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वामे नमः । दीपमालिकाकी रात-को यह मंत्र जपे सिंदूर लक्ष्मीको चढावै धूप दीप फूलोंसे पूजा करै दो हजार २८ जप करै भंडार अटल रहै॥२५॥

ॐ ह्रौं आगच्छ कनकवती स्वाहा ॥ गौरवर्ण कमल हाथमें लिये भगवतीकी जाति (चमेली) के फूलोंसे पूजा करे तो आधी रातको प्रसन्न हो गंगादेवी आती है पच्चीस दिनतक २१ सौ जप करै ॥ २६ ॥

ॐनमोचामुण्डे प्रचण्डे इन्द्रायॐ नमो विप्रचंडालिनी शोभिनी प्रकर्षिणी कर्षय आकर्षय द्रव्यमानय प्रबलमानय हुं फट् स्वाहा ॥ प्रथमदिन उपवास करे शीतलतासे रहै क्रोध ना करै धरतीपर सोवै मीठा भोजन जीमें जीमते जीमते छोड दे अपवित्र स्थानमें मंत्र स्मरण करै २१ दिन सुमिरण करनेसे सिद्धि होती है । फिर सात दिनतक पृथ्वीपर सोवे आश्चर्य दीखे तीसरे दिन स्वप्नमें दीखे उसमें रौद्रादि रूप दीखता है यदि स्वप्नमें न दीखे तो फिर २१ दिन जप करै तो स्त्रीरूप प्रत्यक्ष दीखे छल करै अभक्ष वस्तु लाकर दे अनाचार करै मनको भय दे यदि शंका न करै तो मंत्र सिद्ध हो लक्ष्मी प्रत्यक्ष हो ॥ २७ ॥

ॐनमो धरणीन्द्रा पद्मावती आगच्छ २ कार्यं कुरु, २ जहां भेजो वहां जाओ जो मँगाऊं सो आन देओ आन न देवो तो श्रीपारसनाथकी आज्ञा सत्यमेव कुरु २

स्वाहा ॥ यह मंत्र एक सहस्र जपै पूर्व अथवा आग्नेय दिशाकी ओर मुख करके बैठे कार्तिक बदि १३ से आरंभ कर पडवातक पूर्ण करे तो वस्तु लाकर देती है ॥ २८ ॥
नारास्थिनिर्मितां मालां गले पाणौ च कर्णयोः ॥ धारयेज्जपमालां च तादृशीं तु श्मशानतः ॥ लक्ष-मेकं जपेन्मन्त्रं साधयेन्निर्भयः सुधीः ॥ ततो महा-भया सिद्धा ददात्येव रसायनम् ॥ तेन भक्षित मात्रेण पर्वतानपि चालयेत् ॥ वलीपलितनिर्मुक्त-श्चिरजीवी भवेन्नरः ॥ ॐ ह्रीं महाभये हुं फट् स्वाहा । अथवा (ब्लीं स्वाहा) ॥ २९ ॥

अर्थः-मनुष्यके गले कान और हाथकी अस्थियों-की माला बनाकर स्मशानमें इस मालाको धारण कर (ॐ ह्रीं०) यह मूल मंत्र निर्भय होकर एक लाख जपे तब महाभया सिद्ध होकर रसायन देती है उसके भक्षणमात्रसे पर्वतोंको भी चला सक्ता है वली और पलित (केशोंका श्वेत होना) से निर्मुक्त होकर यह प्राणी चिरजीवी होता है ॥ २९ ॥
शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावद्दृश्येत चन्द्रिका ॥ दत्ते

पीत्वा यदमरोऽमृतं तत्त्व भवेन्नरः ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः (क्लीं) स्वाहा ॥ ३० ॥

अर्थः-(ॐ ह्रीं चंद्रिके॰) यह मंत्र शुक्ल पक्षमें जब तक चांदनी दीखती रहै जपे तो सिद्ध होनेपर देवी अमृत देती है जिसको पीकर यह अमर होता है ॥३०॥

शक्रचापोदये लक्षं निर्गुण्डीतलमध्यगः ॥ जपेन्मंत्रं ततस्तुष्टा देवी पातालसिद्धिदा ॥ ऐं ह्रीं ऐन्द्रिमाहेन्द्रि कुलु कुलु चुलु चुलु हंसः स्वाहा ॥ ३१ ॥

अर्थः-(ॐ क्लीं॰) यह मंत्र निर्गुण्डीके नीचे इन्द्रधनुषके उदय हुए पर जपना आरंभ करे एक लाख जपनेसे पातालकी सिद्धि देनेवाली देवी प्रसन्न होती है ॥३१॥

हृदि ध्यात्वा जपेद्रात्रौ हंसबद्धं सचेतकः ॥ योगं ददाति सा तुष्टा जरामृत्युविनाशनम् ॥ ॐहः सः सर्वलोचनानि बन्धय २ देवी आज्ञापयति स्वाहा ॥ ३२ ॥

अर्थः-ॐहः सः यह मूल मंत्र रात्रिमें सावधान होकर जपे तब भगवती प्रसन्न होकर जरामृत्युविनाशक योग देती है । यह हंसबद्ध चेटक है ॥ ३२ ॥

स्वीयमूर्ध्नि करं वामं दत्त्वा लक्षं जपेन्मनुम् ॥
वाक्सिद्धिं मंत्रिणो लिङ्गे चेटकस्तु प्रयच्छति ॥
ॐनमो लिंगोद्भव रुद्र देहिमे वाचं सिद्धिं विना
पर्वतगते द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः ॥ ३३ ॥

अर्थः—ॐनमो लिंगोद्भव० यह मन्त्र अपने शिरपर बायां हाथ धरकर लाख जपे तब वाक्सिद्धि होकर साधकके चिह्नमें चेटक होता है ॥ ३३ ॥

ॐ नमो अनादिपुरुष अन्नही राखो ठाम कोठार भंडारकी ताला कुंजी खोल दो अन्न दो रिचक दो चून दो अन्न चूनरी पूरन करो चोक दे उन मेल सुहाली आगे मेल। यह मन्त्र १०८ सत्ताईस दिनतक जपे तो धान्यकी वृद्धि हो ॥ ३४ ॥

अब अघोर मंत्र कहते हैं। आदि अन्त अनहद उपाया, सोहं हंस निरंजन काया। गौरा ईश्वर महादेव पार्वतीकूं सुनाया। उग्र दृष्टिकर अमर भई काया, गौरामाई बहुत सुख पाया।

ॐ अघोर, अघोर, महा अघोर, रवी अघोर, शक्ति अघोर, पीड अघोर, प्रान अघोर, धरती अघोर, अग्नि

अघोर, जल अघोर, थल अघोर, पवन अघोर, पानी अघोर, चन्द्र अघोर, सूर्य अघोर, अठारह भार वनस्पति अघोर, ॐ घोर घोर ॐ घोर घोरता ।

अब हमारी वज्रकी काया, बाहर भीतर वास न आवे, जीभ न फटे हाड न टूटे पीडन हो प्रान पडे तो सतगुरुलाज, ॐ अलीलस्वामीकी वाचा फुरे पडंत १ ॐ निरंजन निराकार ज्योतिमध्ये उत्पत्ति माता घोरगायत्री; नेत्रमध्ये चन्द्र सूर्य, अग्निमध्ये गंगा यमुना मुखधारा, सुरतरोमावलीमध्ये तेतिस कोट देवता, उनसठ मध्यमें कैलास पर्वत कैलास पर्वत मध्यमें सिद्धक, सिद्धक मध्ये दुर्वासा ऋषि दुर्वासा मध्ये श्रृंगी श्रृंगीमध्ये श्रृंगी ऋषि उत्पन्न हुए, पादोदक माता अघोर गायत्री, २ पडंत, ॐ नमो आदेश गुरुको ॐ नमो देहस्थ अखिलदेवता गजमुखी ईश्वरी भैरवी योगिनी, यक्ष पितृभ्यो नमः । सेमलकी लकडी एक सौ आठ लावे उनको पहले ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं पुं कमलसौन्दर्यैनमः विस्तर २ स्वाहा । जप एक लक्ष दीप धूप दे सिद्ध होय जो इच्छा करे सो होय ॥ ३५ ॥

ॐ वनखण्डकी लकडी वनखण्डका तेल, धरती ऊपर आकाश बीज मंत्रका ऐसा गहिये जो महादेव पार्वती सुखी होय। बीज मंत्रका धरो ध्यान, काया मध्ये ले विश्राम, जाग्रकोटे सूर्य तपे, जतन शून्य मंडलमें जपे, सर भैरों साद्र भैरों गढ भैरों नृसिंह वीर पाया, संजीवनमंत्र बीजमंत्र मनमें धरे सोई करे, ॐ अन्न भैरव पान आकाश भैरव भैरव श्री श्री श्री श्री श्री श्री मंत्रविधिः। वंशलोचन ३ टंक, चनेकी दाल ३ टंक, भंग ३ टंक, गुड़ १२ टंक, सात घरकी भिक्षा मांग लावै, उलटी चक्कोसे पीसकर भैरवकी मूर्ति बनावे उसके पेटमें यह सामान भरै पीछे भैरव स्थापन करे, सामग्री एकत्र करे अठावरी लपसी, बडा तिलवटी दे फूल चढावे होम करे पूजा करनेके उपरान्त भंडारमें रख दे अक्षय होय ॥ ३६ ॥

ॐ नमो ह्रीं ह्रीं क्लीं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी चक्रवेगेन कटारी चमचम कारिणी परग्रहणी स्वाहा। इति कटोरीचालनमंत्रः ॥ ३७ ॥

श्मशाने धारयेत्कृष्णमाषांश्च मधुना सह ॥ तेन वाराभिमंत्रेण मुद्रिकां चालयेत्क्षणात् ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रींमुद्रिकायाचलि २ द्रव्यआकर्षय २ नहीं चले तो उकल भिक्षाकी आन वीरहनुमन्तकी आन विद्याधरगंधर्वकी आन ॐ आं ह्रीं ऐं क्रौं फट् स्वाहा । इति मुद्रिकाचालनमंत्रः । श्मशानमें जाय उर्द और शहत ले सातवार यह सिद्ध मंत्र पढनेसे मुद्रिकाचालन होती है इक्कीस वार तंदुलोंको अभिमंत्रित कर उससे मुद्रिकाको ढके तो उसी समय मुद्रिकाचालन होता है इसमें सन्देश नहीं है ॥ ३८ ॥

ॐ नमो देवी कामाक्षिके त्रिशूलखण्डहस्ते पादः पाति गरुड़सर्प भक्षी तव पर्वतेसमांगन ततो चिन्तामणि नृसिंह चल २ छप्पनकोटिकात्यानी तालु प्रसादकेॐह्रौं ह्रीं क्रौं त्रिभुवनं चालय चालय स्वाहा । इति बुद्धिकरणमंत्रः । यह मंत्र इक्कीस दिनतक एक सौ आठवार जपै फिर इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर वस्तुखानेसेमनुष्य-बुद्धिमान् होता है ॥३९॥ जब श्री नाम शब्द गुणाकर लिखते हैं ॐ अध नाम पजीरी, ॐ अस्य स्वामी समरथ धनी तत्त नाम सो स्वर्गमाहीं । अर्द्ध नाममें रहे समाई ॐ अहंकार महंकार ररंकार, सतशब्दसुरतरोपार उच्चरन्ते जीवन मुक्ति, सरवनसाखी, अर्द्धनामेंअनगढ

का किया, गुरूचेला दोनों बतलाया, अर्द्धनाम कह सुनाया, अर्द्धनाम धर्मशाला सुनाया, जिन नामसों पत्थर तिराया, जिननामसे सन्त उधारा, सोई नाम सत जानो भाई, नितबुद्धिहोइराह धताई सो अर्थ मिल गया जाई, नीचा पुरुषहू सिद्धी पाई सो समरथ दिया बताय आउतरैया पथरज तिखो जाय, सत् ये कर्मकी करी चलाई, तामे निहचै रहै समाई, जोत जोनि शंकर नहिं आव, सरवन नारद है सुख पाव । नमो अरधका केवल नाम, तिन ऊपर नहिं कोई विसराम । वशिष्ट मुनि कथंते पूरन ब्रह्म सुनन्ते । मोक्ष मुक्ति फलं लभंते सही एक अर्द्ध विसतार । सांस सांस चढंते मन मोक्ष चढन्ते द्वादश आगे लखो जन्ते । ॐ सोहं त्रिकुटी सो विश्राम मूल अर्द्ध कहुंवापरिमान । एती साध नाम करिया चलंत पद्म आसन गंगनका भेव । अजरी बजरी दोनों न्यारी, तिनसासंकालागीताली दश दरवाजा बन्द करो, तो शब्द जाते मनवां धरो ॥ १ ॥

ॐ अलीलकी माता कुमारी । पिता जतीलोकी काछ वज्रकी काया पिया प्याला रहै निरबंध । जन्मे न मरै न फेर वो तरे बाल जपै तो बाल हो वृद्ध जपै तो बाल

होय, उलटंत अलील पलटंत काया, ऐसा आराम कोइ साध विरला पाया, बीज मंत्रका धर ध्यान, सिद्ध हू वो पनप्रमान, चौरासीमें ध्यान लगाय तो आवा गमन वोर न आया, नौनाथ चौरासी सिद्धते धरा ध्यान, अलील प्रेम हंस विश्राम, प्रेम जोत प्रेमस्थान अनन्त कोटि हुआ कल्यान, कथ्यन्ते अटल पुरुष सुनन्ते अखण्डी अटल । इति अलील बीजमंत्र सम्पूर्णम् ॥ ४० ॥

ॐ धरती माई मैं तेरा पुत्र तू मेरी माई जो चार चार अंगुलकी देह उठाई तहां उतारो धरम गुसांई बांधले धरती उठायले कंथ शब्द अगोचर कंठ वाचा, वाद बदेले अलील, अनहदकु बांध, बांधूं चौंसठ बांध अष्ट कुली नौ नाग बांधूं तनीतकलाचट्टसवाई अघोर अघोर महाघोर धरती अघोर आकाश अघोर सूर्य अघोर काम अघोर विष्णु अघोर सब आलम रत्ती संतच्छ श्रीगुनउनचास नाम, स्वसकत अघोर, अमरी बजरी अघोर काया, अघोर कंठ ना फूटै, पीड न पडे, विष्णु कहे, अंग सत्, ऐसा होय, काल न खाय, अमरी बजरी, ॐ हं रन बंध काया, कंठ ना फूटै, पीड न पडे, भर भर पीड पडे न काया,

ॐ हसनाहंसः रूपाकी अमरी सोनाकी बजरी, रूपाका प्याला, पडे नहीं काया, भर भर पीवे गोरखनाथ आदि करो, अनादि करो, कृपा करो, शिक्षा करो, अलील करो, अमर करो, महा अघोर करो, श्रीधर्म गुसाईका वाचा फुरो, ॐ ह्रीं धरती फल बोलिये । इति बीजमंत्रः । अघोर अलख पुरुषने गोरखनाथको सुनाई, नाथजीकी पादुका नमो आदेश, इति अघोर मंत्र गायत्री सम्पूर्णम् । विधि–दिवालीकी रातको खेतकी मट्टी लीजे उसकी माला कीजे ॐ रूषी २ महाज्योतिः स्वरूपी सरगा परगा। आये ऋषि आये ऋषि मंत्र लाये लखो गायत्री अलील मंत्र जपो अनहद जपो शक्ति जपो अलंगुरू जपो बालंग वाद्री, सवासेर विशखाबुट्टी हाडी, एता खाउ एता जारू, इस घट शिडकी रक्षा गुरू गोरखनाथ करे, सोनेकी अमरी रूपाका प्याला, भर भर पीवे गुरू गोरखवाला, एता पीव आपही पीव, पंथमें आदिक जुगादि, युगादिक ब्रह्मा ऋषिः विष्णु-ऋषिः महेश ऋषिः ब्रह्मा ऋषिके पांच पुत्र सनकादिक ऋषि वशिष्ठ ऋषिः बालखिल्य ऋषिः नारद ऋषिके चार पुत्र, मांड ऋषिः वसु ऋषिः धौम्य ऋषि मातंग ऋषिः ऋषि मंत्रः । अघोर गायत्री पीडकुलकुरः जो साधै सो

इक्कीस पीढीले उद्धरेविनाऋषिमंत्र किरिया करे तो इको पीडी नरकमें पडे जोगजुगता मोक्षही पाता, अनन्त कोटि सिद्धा । इति ऋषि मंत्र गायत्री ॥ ४१ ॥

गोरखनाथने साधी अघोर गायत्री । अथ गोदावरीमें कही नमस्ते नमामि, काले अकाल दृष्टता, विश्वास मनमें रखना उलटी त्रिकुटी साधना इति ऋषि मन्त्र अघोर गायत्री सम्पूर्णम् ॥ ४२ ॥

अथान्नपूर्णामन्त्रः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ईश्वरध्यानम् । अन्नपूर्णायै नमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं ह्रीं हुंकली कुरुस्वामिनी जय विजय अप्रतिम चक्रे मम कर्षय सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा । यह मन्त्र एकसे आठ बार जपकर खाद्य वस्तु भंडारमें डाल दे तो अनन्त धान्य होय १ ॥ दूसरा मन्त्र । ॐ आसने कमलासने कमलवासिनी अस्थलासीलिया वीडज्योति सटा समोहाविलस वणुताननाभोररूहंजणेर पीतजोगपदसुभयो-बाहुवी करजाय तावतीभ्योएधंरेतो शंख चक्रमणीलक्ष्मी नृसिंहं भजे । यह मंत्र एक सौं आठबार जपे गेहूं चना बाजरा किसी धान्यमें धरे बहुतसा होय ॥ ४३ ॥

ॐ नमो उज्जैन नगरी सिप्रानदी सिद्धिमद्धोम शान्ता हावसे एक झाप डोते झापडका दो बेटा ते बेटा माही एक भूत एक मलो अहोभूत अ आ हो मला अमुकाक घरी विष्यनाखन नाखे तो झापडवीरकी आज्ञा ठःठःठः स्वाहा॥ यह मन्त्र १०८ बार वृक्षके नीचे जपे अथवा कोठेमें बैठकर जप गूगलकी गोली १०१ लाल कनेरके फूल १०० इनका हवन कर मन्त्र पढे पीछे शत्रुके घर डाल दे जहां शत्रु लांघे विष्ठा होय सतः ॥ ४४ ॥

अवधूतका मन्त्र कहते हैं। ॐ नमो षट्क गांवमें आनदी गंगा जहां धुंधं साधनीका स्थान, नौ नगर नौ नेहरा नौ पटना नौ ग्राम, जहां दुहाई धुंध साधनीकी ॐ उलटंत वेद पलटंत काया, गरज गरज वरसंत पत्थर वरसंत लोही गरजन्त ध्रुवा वरसंत, चलि चलि चलाई चकवा धुंधला धनी ॐ धुंधला धनी पटन पटन सब डाटंत फट् स्वाहा। अथ विधि। कारी गौका गोबर अधरमेंही लेकर उसकी तीन कोनी घेरी करे उसके ऊपर धुंधला धनीकी मनुष्याकार मूरति धरे, जिसका मुख आगे पत्थरमें को हो, लोढी १ धूलकी मुट्ठी १ और उरद ७ बार मारे,

इसके ऊपर मुरगीका अंडा फोड़दे उसपर शहदकी धार दे अंडा फोड दे। पीछे पत्थर लोढी धूल सब फेंक दे जिस नगर गांव पै चलावै सब स्तंभित होय ॥ ४५ ॥

ॐ कोरा करवा मधुसे भरो, हनूमानकी लार सात समुद्र सोखा वीर, सोपजाई वनस्पती खाइ पाहन फोड टूक टूक कर डाले, चन्द्रकी भुजा उखाडी सूरजकी मूछ उखाडी रावनका सीस उपाडा चाल चल चकवाकी गरा वीर, जो न चलें शिवशक्ति सीताका सोधा चुका चक्कर ऊपर चक्कर फिरता, हनुमंतवीरका वाचा चले चलो मंत्र स्वः स्वाहा॥ बछियाका गोबर अधरमें लीजे तीन कोनी घेरा दीजे सूर्यके सन्मुख महावीरका आसन दीजे कोरा करवा भर लीजे, उर्द २१ आमलासार १ सौ उखड १ नींबू १ यह रखकर मंत्र १०८वार जपै बागमें आमलासार रखदे तो बाग सूखे कामी धोरामें रक्खै तो हरिया होय नींबूके बीज रक्खै कुम्हारके आवेमें रखै तो बर्तन फूटै गंधक उडद रक्खे तो पत्थर फूटै ॥ ४६ ॥

ॐ नमो आदेश गुरुको हो हनुमंतवीर वसती नगरी कल करता जेहु कहु जेहु चेतु जेहु मागु ॐ जो न करै जो न करावै अंजनीका सीधा पाव धरेगा, अंजनीका

चूसा दूध हराम करेगा, नेलती खेतलीकी वाचा चूकै गौतम रूखै सरका कमण्डला पानी सूखै चलो मन्त्र गौतमीकी वाचा ॥ ४७ ॥

अथ यक्षिणीमन्त्रः ।

ॐ चर्क चर्क शाल्मल स्वर्णरेखे स्वाहा । इति जपमन्त्रः । ॐह्रां हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् । ॐ ह्रैं कवचाय हुं । ॐ ह्रौं नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् इति षडङ्गानि ॥ ४८ ॥

अर्थः—ॐ चर्क चर्क इति इस मूल मन्त्र द्वारा षडङ्ग विधान कर एकलिंग महादेवका जप करे और कृष्ण पक्षकी प्रतिपदाको पूर्व सन्ध्यासे आरंभ करे यह नित्य महीने-भरतक आठ सहस्र जपे और मासान्तमें फिर पूजन करे, रक्त वर्ण देवताका एकलिंगमें ध्यान करता हुआ रातमें फिर मूल मन्त्र जपे तो छः महीनेमें सिद्ध होकर देवी आधीरातमें दिव्य अंजन वस्त्र और अलंकार देती है॥ ४८॥

अर्द्धरात्रे समुत्थाय सहस्रैकं जपेन्मनुम् । मास-मेकं ततो देवी निधिं दर्शयति ध्रुवम् ॥ ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा ॥ ४९ ॥

अर्थ :-ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा। यह मंत्र अर्द्ध रातमें एक सहस्र जपे तो एक महीनेमें सिद्ध होकर देवी निधिका दर्शन कराती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ४९ ॥

दिनत्रयं निराहारः सति सोमग्रहे जपेत्। यावन्मुक्तिस्ततो देवी यच्छत्यञ्जनमुत्तमम्। ॐ ह्रीं यक्षिणी भामिनी रतिप्रिये स्वाहा ॥ ५० ॥

अर्थ :-ॐ ह्रीं० इसके ऊपर लिखे मंत्रको चन्द्रग्रहणसे तीन दिन पहले निराहार होकर जपे तो चन्द्रग्रहणकी मुक्तिके समय देवी दिव्य अंजन लाकर देती है ॥५०॥

एकलिंगगृहस्थाने चन्दनेन सुमण्डलम् ॥ कृत्वा हस्तप्रमाणेन पूजयेदत्र पद्मिनीम् ॥ धूपं सगुग्गुलं कृत्वा जपेन्मन्त्रसहस्रकम् ॥ मासमेकं ततः पूजां कृत्वा रात्रौ पुनर्जपेत् ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी दत्ते दिव्याञ्जनं शुभम् ॥ ॐ ह्रीं पद्मिनि स्वाहा ॥५१॥

अर्थ :-ॐ ह्रीं पद्मिनि स्वाहा। एक लिंगके स्थानमें चन्दनसे एक हाथ प्रमाण मण्डल करके उसमें पद्मिनीको पूजै धूप गूगल देकर इस मंत्रको १ हजार जपे एक महीने पूजा करके रातमें फिर जपे तो अर्द्धरातके समय आकर देवी रातमें दिव्य अंजन देती है ॥ ५१ ॥

वटवृक्षतलेकुर्याच्चन्दनेनसुमण्डलम् ।
यक्षिणीं पूजयेत्तत्रनैवेद्यमुपदर्शयेत् ॥
शशमांसासवैः पश्चान्मन्त्रमावर्तयेत्सुधीः ॥ दिने दिने सहस्रैकं यावन्मांसं प्रपूजयेत् ॥ ततो देवी समागत्य दत्ते दिव्याञ्जनं परम् ॥ ॐ ह्रीं आगच्छ कनकवति स्वाहा ॥ ५२ ॥

अर्थः-वटवृक्षके नीचे चन्दनका एक सुन्दर मण्डल बनावे उसमें यक्षिणीका पूजन कर नैवेद्य दे फिर शशा (खरगोश) के मांस और आसवसे पूजन कर (ॐ ह्रीं आगच्छ०) यह मन्त्र प्रतिदिन १ सहस्र महीने भरतक जपे और महीने भरतक पूजा करता रहे तो देवी आकर दिव्य अञ्जन देती है ॥ ५२ ॥

श्रृगालस्याक्षिकर्णेन ह्यञ्जयेल्लोचनद्वयम् ॥ भूतं पश्यत्यसौ तस्मात्संप्राप्नाति महानिधिम् ॥ देवदालीरसैश्चक्षू रञ्जयित्वापि तत्फलम् ॥ ॐ गं गणपतये नमः । ॐ चामुण्डायै नमः । ॐ भूतं दर्शय दर्शय स्वाहा । उक्तयोगद्वयस्यायमेव मन्त्रः ॥ ५३ ॥

अर्थः-शृगालकी अक्षिका सम्यक् चूर्ण कर दोनों नेत्रोंको आंजै तो भूतका दर्शन होता है और महानिधिका दर्शन होता है तथा प्राप्त होता है। देवदालीका रस आंखोंमें लगानेसे भी यही फल होता है। ॐ गं गणपतये नमः इत्यादि दोनों योगोंका यही मन्त्र है ॥ ५३ ॥

इति नित्यनाथविरचित रसरत्नाकर मंत्रशास्त्रे
पंचमोपदेशः समाप्तः ।

अथ अज्ञातनिधानस्य ग्रहणम् ।

ब्रह्मचारिसहस्रेण शिलामूलशतेन च ॥
रुद्राणां च सहस्रेण शिखाबन्धो विधीयते ॥१॥
ॐ रक्ष २ विघ्ने स्वाहा। अनेकसर्वसहायानां शिखाबंधनं कुर्यात् ॥

अर्थः-ॐ रक्ष २ यह मंत्र और ऊपर लिखा श्लोक पढकर शिखा सब कार्योंमें बांधनी चाहिये ॥ १ ॥

शाबरं धारयेद्रूपं मंत्री सर्वार्थसिद्धिये ॥ २ ॥

अर्थः-सब अर्थसिद्धिके लिये मंत्रीको साबररूप धारण करना चाहिये वह ऐसा कि कोई गुणी स्त्री मरी हो तो उसके बालोंका यज्ञोपवीत करै उसकी भस्म शरीरमें

मलै नरमुण्ड धारण किये नग्न रहै मोरकी पृच्छा धारण किये रहै ऐसा करके फिर पूजा करै । ॐ संकोचाय स्वाहा । यह मन्त्र १०८ जपे तब यह मन्त्री तेजयुक्त होता है ॥ २ ॥

अथ लक्ष्मीमन्त्रः ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः । यह मन्त्र पीतवस्त्र धारण कर पीपलके पत्तोंपर एक लाख लिखकर पानीमें बहावै तो लक्ष्मी सिद्ध होय ॥ ३ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं रक्तचामुण्डे स्वप्ने कथय २ शुभाशुभं ॐ फट् स्वाहा । यह मन्त्र १०८ वार इक्कीस दिनतक जपनेसे स्वप्न सिद्धि होती है ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं आं लक्ष्म्यै स्वाहा । कोई वस्तु तोलकर इस मन्त्रसे गांठ बाँध धरे प्रभातको तोले जो घटै वह महँगी होगी बढ़े तो सस्ती होगी अन्नपूर्णासत्य ॥५॥

ॐ सतनाम आदेश गुरुको ॐ पहला तारा ईश्वर तारा, जहां हनूमान मारा ठंकारा, काल भैरूं कालीरात, काली पुतली माजल रात कालो कलुओ आधी रात, चलतो बाटः चित्तकर उलट मार पुलट मारहो हनुमंतवीर

हाल आव, सिताब आव सवा पहरमें आव, सवा घडीमें आव, जा किसकी खाटपर ऋद्धि लाव सिद्धि लाव सूतीको जगाय लाव बैठीको उठाय लाव, चलतीको बुलाय लाव, हो हनुमन्तवीर हमारे कार्यमें ढील करोगे तो सदाशिवकी दुहाई माता अंजनीकी दुहाई सीधा पाँव धरोगे तो बत्तिस धारको दूध हराम करोगे, मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति चलो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ इतवारके दिन सवा पावकी कढाई करै कालभैरोंका मंगलवारको रोट करै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं वीरवर गणपते वः वः इदं विश्वं मम वशमानय ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ॥ १२ हजार जप करै, अंजनीमाला, लाल चन्दनका तिलक रक्त वर्णसे ध्यान करना चाहिये तो सिद्ध होकर गणेश प्रत्यक्ष वर देते हैं पंचामृतसे स्नान करावे १०८ आहुती दे, पीछे माला फिर जप करै तो ऋद्धि सिद्धि मिलै ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मि आगच्छ २ मम मन्दिरे तिष्ठ २ स्वाहा ॥ इसको एक सौ आठ वार नित्य जप करनेसे लक्ष्मीवान् होता है ॥ ८ ॥

ॐ नमो लिङ्गोद्भव रुद्र देहि मे वाचा सिद्धिं चिन्तितं

देहि २ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः। इसके जपसे वाचा सिद्धि होती है ॥ जप १ लाख ॥ ९ ॥

जप्यं मासत्रयं रक्तकम्बला सा प्रसीदति ॥ मृतकोत्थापने कुर्यात्प्रतिमां चालयेत्तथा ॥१०॥

ॐ ह्रीं रक्तकम्बले महादेवी मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान् कम्पय नीलय विलसत् हुं हुं ॥ १० ॥

अष्टोत्तरशतं जप्त्वा यत्किंचित्स्वादुभोजनम् । तद्बलिर्दीयते तस्यै वटाधो मासमेकतः ॥ ततो देवी समागत्य हस्ताद्गृह्णाति भोजनम् ॥ तत्रैव सावरं दत्ते नित्यं सांनिध्यकारकम् ॥ अतीतानागतं कर्म स्वस्था स्वस्थं ब्रवीति सा ॥ प्रतिमापर्वतान्सर्वांश्चालयत्येव तत्क्षणात् ॥ ॐकारमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ हुं चेटके जय जय स्वाहा ॥११॥

अर्थः-ॐ ह्रीं रक्त० यह मंत्र तीन महीने जपनेसे रक्तकम्बला प्रसन्न होती है इसकी सिद्धिसे मृतक उत्थापन और प्रतिमा चलित होती है ॥ ११ ॥

यह मन्त्र १०८ जपकर जो कुछ अपने निमित्त स्वादु भोजन है उसकी बलि वटवृक्षके नीचे देवीके निमित्त

दे ऐसा एक महीने करे तो देवी आकर अपने हाथसे उसका भोजन ग्रहण करती है और वर देकर नित्य समीप रहती है बीती आनेवाली भली बुरी सब बात कहती है जिससे यह प्रतिमा और पर्वतोंका चालन कर सकती है ॐकार मुखे० यह इसका मन्त्र है ॥ ११ ॥

ॐ वांकडावीर हनुमंत हांक, स्वर्ग मीत पाताल कंप तीनों लोक कंप, एक हाथमें वज्र खड्ग, एक हाथमें सवा मनका घोटा पाव जंत्र जांघ पजंघा झनाक झनाक ठनाक ठनाक बीर २ हनुमत् २ आव जाय पकड चोटी फला नाक मार थाप सवा मनका रोट गुर्दीं पकडके तुरत मंगाव, पान फूल दीप धूप खाय वैरी होय तो पाव आन लगाव इति हनूमान बीज मन्त्र शब्द सांचा चलो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ १२ ॥

ॐ ब्रह्म इन्द्र रक्ष रक्ष स्वाहा । इत्यपस्मारमंत्रः । दीपकके तेलको सात वार अभिमंत्रित कर उसके मर्दनसे मृगीका रोग जाता है ॥ १३ ॥

ॐ ज्योतिस्वरूप नीरा, रामसों कही हनुमान, किया-दाभैर्ड माता अंजनी पवनका पूत, महाविष्णु गुरु अच्युत गोत्र, दुर्गापाठ गंगा गीता गायत्री शुक्ल पक्ष सनकादिक

पूजा, सूरज मंत्र इति हनुमान बीज मंत्र। अथ विधि-गोरी गायका दही एक दहेडी गूगलगोला २१ कामीकी पूरी २१ दूबका पोढा २१ तेल सवा पैसेभर हनुमानके सात नाम, माथे तेल कूडे तो धाइल आवै १ मूढा ऊपर तेल कुडे तो छाइल आवे, २ पीढ पीछे तेल कुडे तो मैं सासुर आवै, ३ जीवनी भुजा तेल कुडै तो दास आवै ४ बांई भुजा तेल कुडै तो वीर आवै ५ कमरपै तेल कुडै तो कपिलेश्वर आवै ६ गोडा ऊपर तेल कुडै लंगडो आवै, ७ पगपै कुडै तो कपलडा आवै अथ पूजाविधिः। इच्छा-नुसार रोट, लंगोट लपसी, भजिया, बडा; सब पक्कान्न करने फिर आवाहन करै अकेला न रहै दरवाजा न दे प्रत्यक्ष वाचा दे हनुमान पायक है ॥ १४ ॥

अथ हनुमानमन्त्रः।

ॐ नमो हनुमन्तवीर कम्प धरती च शरीर, मार मार हनुमंतवीर हाथी संखमसत गज चढा हाथी चढे तो हनुमंत खेलता, जो आवै मार करता, जो फिर आवै वह पडता आदि शक्तिका तिलक करूं तिन तीन भुवन हूँ वश करूं देश हनुमंत तेरा रूप, खण्ड गूगल राखो धूप, आसन बैठा सुमिरन करूं दोष दृष्टि बांधि दे मोहि, मेरा वैरी

तेरा भक्ष भेजा फोड कलेज चक्ख, उलंट मार पलंट मार झोर मार, घुमंत मार, पटक मार पछाड मार मार मार वेग मार, ना मरे तो माता अंजनीके शिर पांवधर स्वाहा। १०८ वार जप कीजै पहिले हनुमंतके आगे भेंट धरै रोट सवा सेर बीडापान २१ क्वारी कन्याका सूत हनुमानको पहरावै फिर १०८ वार जप करै, नारियल कुटका २ चढावै, फिर स्थानपर आवै, २१ दिनतक नित्य जप करै शुचि शीत व्रत पाले, उत्तम वृक्ष नीम वट आदिके नीचे बैठ पूजे वा मंदिरमें २१ दिन लपसी तिलवटी उरदके बड़े शुद्ध तीरथका जल, घी गुडसे तिलके लाडू बनावै और धान्य पंचक दे, तो प्रत्यक्ष वाचा दे डरना नहीं श्रीराम दूत हैं ॥ १५ ॥

मृगीका मन्त्र।

ॐ ब्रह्म इंद्र रक्ष रक्ष स्वाहा सात वार दीपकके तेलको अभिमंत्रण कर उसके मलनेसे अपस्मार रोग नाश होता है॥ मंत्रयित्वा सप्तबारं तैलं दीपकसंभवम्। तेन मर्दयते क्षिप्रमपस्मारविनाशनम् ॥ १६ ॥

ॐ हुं हुं क्रां रंग महागाड, सुखमुखी दोई दाड दिरना विदार झंकार तैंतीस करोड देवता करन्त स्तुति, तहीं

भोदेव नहीं लोक संति, हाथ कटारन मिली लोहकी असी। शर मुंच कंप पाताल घरघर मार नृसिंहदेवता, नृसिंह वेताल कामरू कामक्षाकी कोट आज्ञा। ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं हुं हुं छुं छुं फट् स्वाहा, इससे शत्रुको कष्ट होय जप ५० सहस्र इस मंत्रसे खाटपै आदमी को पटक दे॥ १७॥

अल्लह रखजलकी मौज, कुतुबकीसीर महम्मदकी गजब, खुदाईका पाक हरयाजवर, मारे २ फलानेके शिरपै जार, मंत्र जूतीके तलेमें लिख रखे शत्रुकी मूरति बनावे उसका नाम ले मूरतिपर जूती मारै तो निश्चय शत्रुपर मार पड़े॥ १८

मन्त्र पछाडनेका।

यह यन्त्र है ॐ नमो बिस्मिल्ल रहिमाने रहिम् अल्लाल्ला

१०३	४८	१०५
१०४	१०२	१००
९९	१०६	१०१

सुभान करः। सुभान इनकूं तमाचा धरः। न ज्वालमीन, ॐ रुण्ड मुण्ड जल जलटा, लपक पकड चोटी धर पछाड आधी रातकूं कुतक माड। ॐ हं ॐ हं हं हं॥ १९॥

श्रीखण्ड किलामनः श्रीऋषिका बाण मतो नारसिंह हंकारिया कहां गई वार। गिरी छुहारा जायफल तेरी पूजा लेह हमारा मंत्र प्रसिद्ध कर देह। शब्द सांचा पिण्ड

काचा चलो मंत्र ईश्वरोवाच । अथ क्रिया । नृसिंहकी मूरति बनाय उसके मुखके आगे गूगल लोहबानकी धूप दे १०८ मंत्र २१ दिनतक जपे, वह धूप जहां लगावे तहां खाय ॥ २० ॥

ॐ हनुमाना, बलवंता, गाजन्ता, घोरन्त तुलसी जाप जपन्ता सवा सेरका रोट पीली जनेऊ सवा सात पानका बीडा लो; सवा सात कोसको दौर जाओ, डंकनी संखनी भूत प्रेत देवदानवको पकड बाँधकर लाओ ना लाओगे तो माताका दूध हराम करोगे शब्द सांचा । विधि ३ मंगलको रोट १। पानका बीडा जनेऊ दीपका धूप दे तीनों मंगलको १०८ जप करे ॥ २१ ॥

ॐ नमो आदेश गुरूको, ॐ रंगः रंगः रंगः रंगः रंगः रंगः रंगः रंगः मूलपवन बंध तुही, सोहं सोहं सोहं सोहं सोहं सोहं सोहं स्वासालीन मंत्रः। चलन्तः चलंतः चलंतः चलंतः चलंतः चलंतः चलंतः चटपट पाताली स्वाहा, फुटंतः फुटंतः फुटंतः फुटंतः फुटंतः फुटंतः फुटंतः कोडन्तमाथा चली वीर कुला पटकंतः । विधि । गूगल तेल सिंदूर रोट लंगोट पूजा अपनी लीजे जहां चलाऊं तहां चलो काटन्त अम्बर धरती गरजन्त अम्वा मेघा हजार २

मनकी शिला बरसावत चलो नगर बौधा मारता चलो वृक्ष उपाडता चलो दुश्मनको पामाल करता चलो सकल भूतदेव दानव पकड़ता चलो शब्द सांचा, पिंड काचा, चलो मंत्र ईश्वरोवाच वाच सुवाच, ब्रह्मवाचा विष्णुवाचा, चूक उभा सुखम् जप ५० सहस्र ॥ २२ ॥

मन्त्र धूपका ।

ॐ धूप कहो हंखरी पियारी तीन लोक हुंकार हमारी सीता ब्रह्मा लिया साथ ऋद्धिसिद्धि हमारे हाथ बीस कोस आगे चल बीस कोस पाछे चल बीस कोस दायें चल, बीस कोस बायें चल न चलै तो कालिका सिगार सीस चले, वज्रलोटा वज्रवान वारा बान किया संग्राम देखूं वज्र तेरी चोट वज्र मारौ पहली चोट रेनगढकी वज्रशिला । तोड नाख फोड नाख खीर २ मरोड नाख इन्यान बांधा विन्यान बांधा ना बांधै तो धरतीका कपाट बांधै रैनगढ जाय कोट फाट लछमी घर पाइये काहेको कासीराम मेरे भाई हनुमान अन्तकाम आइयेपै आइये सवा सेरके रोट चढाऊं पहलवान परचा पाऊं शब्दसांचा पिण्ड कांचा चलो मंत्र ईश्वरो वाच ॥ २३ ॥

श्रीमंत्रः । ॐ कालकंकाल दोनों भाई लोकमर हम जीव यह पिंडको छेदैं तो शंभुनाथकी दुहाई गुरू गोरखनाथकी दुहाई। बोतावा गिरे तो धरती लाज। हाड गिरे तो शंकर लाज, सहस्र वृक्ष किया व बंध, न बंधे तो गुरु गोरखनाथकी दुहाई। बोबा जाताल, बीत भया काल शब्द सांचा पिंड काचा, चलो मंत्र ईश्वरोवाच गोरखवाचा ॥ २४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं ऐं क्लीं क्लीं ग्लौं ॐ नमो कर्णाग्नौ कर्णपिशाचिकादेवी अतीत अनागत वर्तमान वार्ता कथय, मम कर्णे कथय २ तथ्य मुद्रावार्ता कथय कथय, आगच्छ २ सत्यं सत्यं वद वद वाग्देवी स्वाहा जप १००००० एक लक्ष, दशांश होमकर पंचामृत बनावै सिद्धि होय ॥ २५ ॥

ॐ काली २ महाकाली, मद्यमांस फिरै मतवाली, मडेसाने बाजै ताली ब्रह्माकी बेटी इंद्रकी साली ऋद्धि सिद्धि ल्याव माता उठ चल सोतीको जगाय लाव, बैठीको उठाय लाव, मेरा बैरी तेरा भक्ष। सुन्दरी स्वाहा। सिद्धि आई मद आई चख आई ऋद्धि ल्याव, सिद्धि मा उठ चाल चले नहीं तो ब्रह्मा विष्णुकी आन॥ विधिः। गूगल चावल घी गुड तिलकी गोली करे, २१२१ दो हजार

एक सौ इक्कीस गोली बनावे नित प्रति २१ दिनतक १०१ गोली होमैं, शुद्ध तीरथमें यह कार्य करे तो इक्कीस दिनमें सिद्धि होय ॥ २६ ॥

४००	५००	११००	६००
१२००	५००	३००	६००
१००	८००	१०००	७००
९००	८००	२००	७००

इस जंत्रको इंद्रायनके रससे कागदपर लिखे और शत्रुका नाम लिखकर सर्प की बामीमें धर आवे जिसका नाम लेकर धरे उसे सर्प डसे अर्थात् वह सर्पसे भय पावे ॥२७॥

ह्रीं

वीं क्लीं

ॐ नमोबटुकाय

कं ह्रीं

रूं

ॐ नमो काल गौराक्षेत्रपाल बामं हाथं कांति जीवन हाथ कपाल । ॐ गंती सूरज थंभ प्रानसांप रथभंजलतो

विसाररारथं भकुसीचाल पाषानचाल शिलाचाल चाल हो चाली ना चाले तो पृथवी मारेको पाप, चलिये चोखा मंत्रा ऐसा कुंनी अवनारहसही ॥ २८ ॥

अथ नमस्कारमन्त्रः । ह्रीं ह्रों नमः । विधिपूर्वकी जाप पूर्ववत् ॥ २९ ॥

गणेश मन्त्र। श्रीगणपति गणपति वसे मसान जे फल मांगो दें फल आन, पंच लाडू शिर सिंदूर मनकी इच्छा आन दे पूर। अचलको बान हनुमंत जती श्रीगोरख नाम ले ले आउ। ॐ नमोग्रां सोहं स्वाहा विधिः-पूजा एक सौ आठ वार करैलड्डू और कनेरके फूल एक सो आठ लावै इस प्रकार पूजा कर जो मांगे सो पावे दिन ॥ ३० ॥

ॐ श्रीगणेशमन्त्रः ।

ॐ गणाधिपति गणाधिपति वसै मसान जो फल मांगिये देते आन। पांच लड्डू शिर सिंदूर। भर आन २ आनंदपूर। नद वहति भान, फूल फूलंत जागी न भर ल्यावे तो इक फूले हाथी, जीव तो मोहन रहै, मुवा बाल साथ करि जाव तो मुट्ठी करे मन्त्र वार १०८ इक्कीस दिनतक साधपूजा करै ॥ ३१ ॥

ॐ गं गणपतये जहां पठाऊँ तहां आव दस कोस आगे जा, दस कोस पीछे जा, दस कोस दाहिने जा, दस कोस बायें जा, महागुफाकी आज्ञा मान, ऋद्धि सिद्धि दे आन, सत्र सत्र आन, जो न आव तो पार्वतीकी लाज ॐ ग्रां फट् स्वाहा ॥ ३२ ॥

अब २४ सिद्धि लिखते हैं। १ अणिमा–इसके प्राप्त होनेसे बडेसे सूक्ष्म हो जाता है। लघिमा-बडा शरीर होनेपर भी अति हलका होकर आकाशमें उडना विहार करना। महिमा–बहुत भारी स्वरूपका धारण कर लेना जैसी इच्छा हो प्राप्ति जिस वस्तुकी इच्छा करो वही वस्तु प्राप्त होती है पृथिवीमें बैठे चन्द्रमा कूँ छूना आदि। प्रकाम्य–डोलमें प्रवेशके समान अपनी इच्छासे भूमिके भीतर प्रवेश कर जाना। वशित्व–पृथिवी आदिभूत और गौ घट आदिभूतोंमें स्वाधीन हो जाना। ईशित्व–भौतिक पदार्थोंके उत्पत्ति नाश और उनकी रचना करनेमें समर्थ होना। मनोजासिद्धि–जहां मन हो तहां जाय। मनोमुक्त सिद्धि–जहां इच्छा हो तहां प्राण त्यागे। अनुरागिणी सिद्धि–इसकी प्राप्तिसे शीत उष्णता नहीं व्यापती। परकाया-

प्रवेश सिद्धी—दूसरेके शरीरमें अपना आत्मा प्रवेश हो जाता है। सूर्यवशित्व सिद्धिसे सूर्य आज्ञामें होता है। जल-वशित्व सिद्धिसे जल आज्ञामें रहता है। जलमें डूबता नहीं। दूरदृष्टि सिद्धिसे दूरका दीखता है। दूरश्रवणी सिद्धिसे दूरका सुनाई देता है। कामेकमोदना सिद्धिसे जो इच्छा करे सो प्रत्यक्ष होय। अपतालगति सिद्धिसे जहां मन चाहे तहां जाय। देवतास्वरूप सिद्धिसे तैंतीस कोटि देवताओंका रूप धारण कर सकता है। शैलीसिद्धिसे तेंतीस कोटि देवताके विमानमें फिर आवे। हरनासिद्धिसे कहीं हारता नहीं। त्रिकुला सिद्धिसे तीनों लोकमें तीन कालकी सूझे। अग्निवश्य सिद्धिसे अग्नि आज्ञामें रहे जला नहीं सके। शब्दसिद्धिसे जो शब्द मुखसे कहे सो पूरा हो। यह चौबीस सिद्धि गुरु गोरखनाथने कही है, जो इतनी वस्तु त्यागे सो परमपद पावे ॥ २४ ॥

मगनदीन मगनमोहोरत मग्न योगिनीचक्र, जेहि नाडी रविसंचरै सो पग आगे रक्ख चार पग पाँच रव पूरन सीस हरसुर, गोरख बोलै जोगिया ज्योति घटही मूल, सुरगुरु मंगलवार बाम सोम शुक्र बुधवार, जो जेहि घरी सोतेहि घरी खण्डै तो कालभार विपरीतकूं देखै, आज

न आया काल न आया, आया तीजे वारा, रैन पहर घरि वसै तो अन्त चलै मुखमारा, रविबलिया शशिहर बलिया रविशशिहर मझ दीनयारवलिया, जो पाया यारवलिया, तो काहे पूछै पंडितपडिया, सेज छांड भेदाजे-पाव सकलशास्त्रको सिद्ध कराव ज्योतिष व्याकर्ण कहाले कीजै, सूरज चलता निश्चय आव सकल शास्त्रको सिद्ध कराव त्रिया आवता घर छावता, सुरवाले गुणवता हल होम विवाह सकल करम लीजे तादिन वस्त्र आभूषण कीजै, भावार्थ-यह पुरुष जो अपनी देहमें मगन है प्रभातको जब उठै तो जिस ओरका स्वर चलै वही पग आगे रक्खै, वह ज्योति घटमेंही है दहिना सुर बृहस्पति मंगल, बायां सोम शुक्र बुध है यह जब २ चलैं तो योगसे इनका निरोध करै तो कालको जय कर सकता है जिसने रवि शशिरूप दाहिने बामें स्वरको जीता उसे ज्योति दीखती है, उसे पण्डितको पूछनेकी आवश्यकता नहीं। जो सेज छोड़ता है उसेही यह भेद और सब शास्त्रोंकी सिद्धि होती है, जब भेद प्राप्त हुआ तब ज्योतिष व्याकरणसे क्या है, स्त्रीके आतेही घर छाया जाता है, हल होम

विवाह भूषणवस्त्रादि सब होते हैं उसमें सिद्धि कैसे प्राप्त हो । इति गोरखनाथकी चौबीस सिद्धि पूर्ण ।

अथ अन्नपूर्णाबीजमन्त्रः ।

अन्नपूर्णा अन्न पूरै इन्द्र पूरै पानी, ऋद्धि सिद्धि तो गणेश पूरवै त्रिपुरा भवानी । ईश्वरी भंडारभर महेश्वरी शील संतोषकी डिब्बी, तीन लोक लोई आवो सिद्धो जीमो सब कोई । सीता माताकी रसोई जन्म न खाली होई चलामंत्र महायंत्र ॐ सुमरे फटकंत स्वाहा । ॐ अजीयाजीता आय स्वाहा ॐ श्रीसरस्वत्यै स्वाहा । विधि- सात मंगलको सात ग्रामकी भिक्षा एक २ घरसे ले पीछे उसे उलटी चक्कीसे पीस एक रोट कर हनुमानकी पूजा करै यह मंत्र पाठ करे इस प्रकार छः मंगलको पूजा कर सातवें मंगलको सवा दस अंगुलकी आटेकी मूर्ती बनाय भण्डारमें स्थापन करे भण्डार अक्षय होय ॥ १ ॥

श्वेतार्क लानेका मन्त्र ।

दीवालीके तीन रात्रिमें नग्न होकर पवित्रतापूर्वक पूर्वाभिमुख होकर यह मन्त्र श्वेत आकके समीप पढै । येन त्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां वृषकेतनः ॥ तेन

त्वां खानयिष्यामि मम कार्यकरो भव ॥ १ ॥
खदिरस्य च कीलेन खनयित्वा त्रिपाठकः ॥ ॐ
ॐ ॐ अष्टोत्तरशतवारं जत्वा श्वेतार्कमुद्धरेत् ॐ
श्वेतवृक्षमालिनी स्वाहा । जप ३००० ॥ २ ॥

अर्थः—जिस कारण तुमको ब्रह्मा और शिवने खनन किया है इसी निमित्त मैं खनन करता हूं मेरा कार्य करो यह मंत्र ३ वार पढकर खैरकी कीलसे खोदे फिर ॐ ३ यह मन्त्र १०८ वार जपकर श्वेतार्कको उखाडै, फिर ॐ श्वेतवृक्ष० यह मन्त्र तीन सहस्र जपै ॥ २ ॥

मम कार्यं साधय २ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं उमासुतगणेशाय त्रिनेत्राय गजवदनाय अमृतकपोलाय मम मनोवांछित लाभवरदायक ऋद्धि सिद्धिचेतनाय पद्मासनाय एहि २ मम मनोवांछितं पूरय २ लक्ष्मीं देहि २ नृत्य २ धाव २ प्रजामध्ये सर्वत्र मम जयं कुरुकुरु श्रीचिन्तामणिगणेशाय स्वाहा ॥ शूचिर्भूत्वा गणेशाग्रे दशांशहोमेन सिद्धिर्भवति यह मंत्र पवित्र होकर गणेशके आगे १ लक्ष जपै दशांश होम करै तो सिद्धि होती है ॥ ३ ॥

अथ वशीकरण।

श्वेतार्कं चन्दनं चैव गोरोचनविमिश्रितम्। ललाटे तिलकं कुर्याद्राजवशकरं परम् ॥ १ ॥

अर्थ :–श्वेत आक, लाल चन्दन, गोरोचन इनको मिलाय तिलक करै तो राजा वशीभूत होता है ॥१॥

श्वेतार्कं कुंकुमं रक्तचन्दनं समवारिणा ॥ घृष्ट्वा तु तिलकं कुर्याद्वशीभवति सुन्दरी ॥ २ ॥

अर्थ :–श्वेत आक, कुंकुम, लाल चन्दन यह समान ले जलसे घिस तिलक करै तो स्त्री वशमें हो।

श्वेतार्करोचनाभ्यां च जलेनांगविलेपनम् ॥ मेषी-पित्तेन लेपोयं द्रावको वश्यकृत्स्त्रियाः ॥ ३ ॥

अर्थ :–श्वेत आक गोरोचन यह जलमें पीसकर मेषीका पित्त मिलाय निजाङ्गपर लेप करै तो स्त्री द्रवती है वश होती है ॥ ३ ॥

श्वेतार्करोचना दन्ती पिप्पली रक्त मालती ॥ कृत्वाचूर्णं समांशेन महिषीनवनीतकम् ॥ पिष्ट्वा लेपे वशं यान्ति द्रवन्ति रतिसंगमे ॥ ४ ॥

अर्थ :–श्वेत आक गोरोचन दन्ती पिप्पली रक्त मालती 'लालजाती' यह सब बराबर ले इनका चूर्ण कर

इसमें भैंसका मक्खन मिलाय फिर इसको पीस लेप करनेसे रतिके समय स्त्री द्रवती और वश होती है॥४॥

श्वेतार्कं पारदं चैव कारवीं च मुनिद्रुमम् ॥ पिष्ट्वा विलेपयेदङ्गं द्रवणं वश्यकारकम् ॥ ५ ॥

अर्थः-श्वेत आक पारा कारवी (कलौंजी) अगस्तिया इनको पीसकर लेप करे तो द्रावण और स्त्री वशीभूत होती है ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं अगम कामघानाय कामिनी मम वश्यकराय दृष्टिप्रमाणेन वश्यं कुरु २ अस्माकदेकताय मम दृष्टिं मोहय२ सर्वाङ्गं समर्पय समर्पय ह्रीं क्लीं कामाक्षायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ यह मन्त्र पढना चाहिये ॥ ६ ॥

श्वेतार्कदुग्धमध्ये तु ह्येकविंशतिवारकम् ॥ लोडयेन्निर्मलं वङ्गं लेपात्स्याद्द्रावणं ध्रुवम् ॥ ७ ॥

अर्थः-श्वेत आकके दूधमें वंगको इक्कीस बार भावना दे लेपनेसे अवश्य द्रावण होगा ॥ ७ ॥

ॐ नमो योनिभद्राय दंष्ट्राकरालाय अतुलबलपराक्रमाय विकलाहपाय ॐ ऊर्द्धकेशायक्रेकातिमाथे छाती दुष्ट दुर्जन छेदय २ राजसमं जयं कुरु कुरु शत्रूणां मुखं

बंधय २ स्वाहा । इस मन्त्रके जपसे राजा अनुकूल होता है १० सहस्र जप है ॥ ८ ॥

ॐ पुरुषक्षोभिणी सर्वशत्रुविद्रावणी ॐ आं क्रौं ह्रीं भ्रैं जो हि मोहय २ क्षोभय २ अमुक वशीकुरु २ स्वाहा। इसका जप ३००८ तीन सहस्र आठ है रातको नग्न होकर जप करै यह महावशीकरण मन्त्र है ॥ ९ ॥

ॐ नमो आं ॐ भोरो कोरा दोनों भाई, नीक सवागा आप सुभाई । सहो फूल फल निपजै, पानी पचिया पडै। तो सीतारामजीकी वाचा फूरै । यह मंत्र स्वप्नकी बुराईको दूर करै । सात वार पढै ॥ १० ॥

ॐ नमो मेरुपर्वत बाईं वाडा आये हनुमत दे गया झाडा, फूल मुडै फल कीडा पडै न तो हनुमंतकी आन यह मंत्र पढकर सात वार सात कंकरी बागमें डारे तो फल फूल बुरे हो जांय ॥ १० ॥

न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित् ॥
अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ॥ १ ॥

तोलके विना द्रव्योंकी युक्ति नहीं हो सकती इससे प्रयोगके निमित्त तोल कहते हैं ॥ १ ॥

त्रिभिर्यवैश्च गुञ्जा स्यादष्टाभिर्माषकः स्मृतः।
माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्धरणं तन्निगद्यते ॥ २ ॥
टंकः स एव कथितस्तद्द्वयं कोल उच्यते ॥ क्षुद्रको
वटकश्चैव द्रङ्क्षणः संनिगद्यते ॥ ३ ॥

अर्थः—तीन जौकी एक रत्ती, आठ रत्तीका १ मासा होता है, चार मासेका एक शाण होता है इस शाणहीको धरण और टंक कहते हैं, दो शाणका एक कोल होता है जिसको क्षुद्रक वटक और द्रंक्षण भी कहते हैं ॥२॥३॥

कोलद्वयं च कर्षः स्यात्प्रोक्तः पाणिश्च माणिकः।
अक्षं पिचुः पाणितलं किञ्चित्पाणिश्च तिन्दुकम् ४

अर्थः-दो कोलका एक कर्ष जिसको पाणिमाणिक अक्ष पिचु पाणितल किंचित्पाणि तिन्दुक ॥ ४ ॥

बिडालपदकं चैव तथा षोडशिका मता ॥ कर-
मध्यं हंसपदं सुवर्णकवलग्रहः ॥ ५ ॥ उदुम्बरश्च
पर्यायैः कर्ष एव निगद्यते॥ स्यात्कर्षाभ्यामर्धपलं
शुक्तिरष्टमिका तथा ॥ ६ ॥

अर्थः—बिडालपदक षोडशिका करमध्य हंस मध्य सुवर्ण कवलग्रह और उदुम्बर भी कहते हैं, दो कर्षका आधा पल और इसको शुक्ति अष्टमिकाभी कहते हैं ॥५॥६॥

दो पलके आठ तोले होते हैं। आठ मासेका कोल होता है १६ तोलेका कुडव होता है। यहां इतनाही मान बहुत है।

पार्वत्युवाच।

वशीकरणमुच्चाटं मोहनं स्तम्भनं तथा ॥ शांतिकं पौष्टिकं कर्म विविधानि महेश्वरः ॥ १ ॥

अर्थः-हे महेश्वर ! वशीकरण, उच्चाटन, स्तंभन, शान्तिक, पौष्टिक कर्म अनेक हैं ॥ १ ॥

चक्षुर्हानिर्मणेर्हानिः श्रुतिहानिस्तथैव च ॥ ज्ञान-हानिः क्रियाहानिः कीलकं च तथा परम् ॥ २॥ यक्षिणीसाधनं चैव शोषणं पोषणं तथा॥ द्रव्याणां च विशेषेण फलमुत्पादनं तथा ॥ ३ ॥ अन्यानि चैव कार्याणि कुरुते साधकस्तथा ॥ अज्ञानाच्चैव दोषाणां जायते संघटस्तथा ॥ ४ ॥ दोषाननेका-नाप्नोति भूतैश्चैव सुदुर्जनैः ॥ ज्वरैश्चैव महारौद्रै-स्तथा क्लेशैश्च दारुणैः ॥ ५ ॥

मानवैर्दुर्जनैर्दुष्टैः स्वार्थसाधनतत्परैः एवंव्याप्तंजग-त्सर्वं नानाव्याधिसमाकुलम् ॥ उपायं कथय नृणां साधकानां सुखाय च ॥६॥ दुर्जनानां च दुष्टानां

पापानां च तथैव च।। कथयस्व सुयोगांश्च व्याधि-नाशकरान्परान् ॥ ७ ॥

अर्थः-देवी बोली चक्षुहीन, मणिहीन, कर्णहीन, ज्ञानक्रियाहीन, कीलकहीन होकर प्राणी दुख पा रहे हैं साधक अपने कार्यके निमित्त यक्षिणीसाधन शोषण पोषण कर्म करके विशेषरूपसे द्रव्योंका फल प्रगट करते हैं, तथा और भी कार्य करते हैं पर विना ज्ञानके अनेक दोष हो जाते हैं; भूत तथा दुर्जनोंसे अनेक दोषोंको प्राप्त होते हैं बड़े २ ज्वर दारुण क्लेश दुर्जन दुष्ट स्वार्थसाधनमें तत्पर मनुष्योंसे यह प्राणी पीडित हो रहे हैं, इस प्रकारसे यह जगत् अनेक व्याधियोंसे व्याप्त हो रहा है, सो आप साधक मनुष्योंके सुखके निमित्त कोई उपाय कहो, जिससे दुर्जन दुष्ट पापी भी सुखी हो जांय उनकी व्याधिके नाश करनेवाले योगोंको कहो ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

भैरव उवाच।

शृणु देवि वरारोहे येन सिद्धयति वांछितम् ॥ तत्सर्वं कथयिष्यामि मंत्रविद्यां महेश्वरि ॥ ८ ॥ येन प्रयोगमात्रेण फलसिद्धिश्च जायते ॥ ॐ ह्रीं प्रयोगतो देवि मयोक्तभक्तितस्तथा ॥ ९ ॥

अर्थः—हे देवि! सुनो जिससे मनवाँछित फल सिद्धि हो वह सब मंत्रविद्या मैं कहता हूं जिसके प्रयोगमात्रसे फलसिद्धि होती है, हे देवि! ह्रीं प्रयोगसे सिद्धि होती है परन्तु मैं कहता हूं कि भक्तिपूर्वक प्रयोग करने चाहिये ॥ ८ ॥ ९ ॥

पार्वत्युवाच ।

ॐ ह्रीं नमस्कृत्य महादेवं रुद्रं शत्रुञ्जयं तथा ॥ कपर्दिनं विरूपाक्षं सर्वदुःखभयापहम् ॥ १० ॥

अर्थः—पार्वती बोली महादेव रुद्र शत्रुंजय कपर्दी विरूपाक्ष सब दुखके नाशक शंकरको प्रणाम करके ॥ १० ॥

ब्रूहि रुद्र महायोगं राजशत्रुविनाशकम् ॥ यस्य प्रयोगमात्रेण कार्यसिद्धिश्च जायते ॥ ११ ॥

अर्थः—हे भैरव! आप राजशत्रुविनाशक महायोग कहिये जिसके प्रयोगमात्रसे कार्यसिद्धि होती है ॥ ११ ॥

भैरव उवाच ।

आकर्षणं च भूतानां पुनरुन्मादनं तथा ॥ विद्वेषणं तृतीयं च चतुर्थमुच्चाटनं तथा ॥ १२ ॥

अर्थः—भैरव बोले प्राणियोंका आकर्षण, उन्मादन, विद्वेषण, उच्चाटन ॥ १२ ॥

अहितोच्चाटनं चैव पानीयस्तम्भनं तथा ॥ अनलस्तम्भनं चैव वशीकरणमुत्तमम् ॥ १३ ॥

अर्थः—शत्रूच्चाटन, जलस्तंभन, अग्निस्तंभन और अठावां वशीकरण है ॥ १३ ॥

अन्यानपि प्रयोगांश्च शृणु देवि वरानने ॥ शिवेन कथिता योगाः सर्वसिद्धिकराः शिवे ॥ १४ ॥

अर्थः—हे सुमुखि देवि! और भी अनेक प्रयोग हैं वे सुनो यह सब सिद्धि करनेवाले योग शिवजीने कहे हैं॥ १४॥

सुमूकीकरणं चैव गात्रसंकोचनं तथा ॥ दूषणं धान्यशश्यानां स्तम्भीकरणमेव च ॥ १५ ॥

अर्थः—मूकीकरण, गात्रसंकोचन, धान्यादिका दूषण, स्तंभीकरण ॥ १५ ॥

पानीयस्य विनाशं च मधुनाशं तथैव च ॥ गजवाजिप्रकोपं च ज्वरप्रकोपं तथा ॥ १६ ॥

अर्थः—जल नाश करना, मधु नाश करना, हाथी घोडे और ज्वरका कोप कराना ॥ १६ ॥

आवेशं च भुजङ्गानां मानवानां तथैव च ॥ सिंहानां नाशनं चैव पक्षिणां च विनाशनम् ॥ १७ ॥

अर्थः—सर्प और मनुष्योंको कोपित कराना, सिंह और पक्षियोंका नाश कराना ॥ १७ ॥

वाक्सिद्धिकरणं चैव शीघ्रज्वरविनाशनम् ॥ वेतालपादुके सिद्धिः सिद्धिश्चाञ्जनमूलकम् ॥ १८ ॥

अर्थः—वाक्सिद्धि कराना, शीघ्रही ज्वर दूर करना, वेतालपादुकासिद्धि, अञ्जन और मूलका सिद्धि ॥१८॥

विद्याशास्त्रप्रयोगं च औषधिश्चाभिचारकम् ॥ विद्यागुप्तिर्नरैः कार्यं रक्षितव्यं प्रयत्नतः ॥१९॥

अर्थः—विद्या और शास्त्रका प्रयोग, औषधि अभिचारकर्म कहे हैं। मनुष्योंको विद्याकी विशेष रक्षा कर ऐसी विद्या गुप्त रखनी चाहिये ॥ १९ ॥

अकुलीनाय चौराय भक्तिहीनाय चेश्वरि ॥ निन्दकाय न दातव्यं नास्तिकाय विशेषतः ॥२०॥

अर्थः-हे शिव! अकुलीन चोर भक्तिहीन निन्दक नास्तिकके निमित्त ॥ २० ॥

उपदेशो न कर्तव्यो वर्जनीया नरा इमे ॥ गुरुभक्ताय दातव्यमास्तिकाय विशेषतः ॥ २१ ॥

अर्थः—इन विद्याओंका उपदेश न करना चाहिये ये

मनुष्य वर्जित हैं. यह विद्या गुरुभक्त और आस्तिकको देनी ॥ २१ ॥

शिवभक्त्यैकमनसि दृढचित्तसमन्विते ॥ कुर्वन्ति ये क्रियां ते वै प्राप्नुवन्ति नराः शुभम् ॥२२॥

अर्थः-तथा शिवके एकाग्रभक्तदृढचित्तको देवी चाहिये जो लोग क्रिया करते हैं वे मंगलको प्राप्त होते हैं ॥२२॥

यदीच्छेदात्मनः सिद्धिं तथात्मरक्षणं तथा ॥ सत्पुरुषाय प्रदातव्यं गुरुदेवरताय च ॥२३॥

अर्थः-जो अपनेको सिद्धि तथा अपनी रक्षा चाहै तो गुरुदेवमें प्रीति करनेवाले सत्पुरुषको यह श्रेष्ठ विद्या प्रदान करै ॥ २३ ॥

लम्पटाय न वक्तव्यं दुष्टचित्ताय पार्वति । सिद्ध्यन्ति सुजने योगा गुरुभक्तयुते नरे ॥२४॥

अर्थः-हे पार्वति ! लम्पट और दुष्ट चित्तोंवाले पुरुषोंसे यह न कहने गुरुभक्त और सुजन पुरुषोंकोही यह योग सिद्ध होते हैं ॥ २४ ॥

ब्राह्मणानां गुरूणां च स्त्रीषु साधुजनेषु च ॥ तपस्विनां च देवेशि प्रवक्तव्यं हिताय वै ॥ २५ ॥

अर्थः—ब्राह्मण, गुरु, स्त्री, साधु माहात्मा, तपस्वी, और हितकारियोंको यह प्रयोग कहने ॥ २५ ॥

ह्रीं मंत्रं यो न जानाति स रुष्टः किं करिष्यति ॥ सागरः शुष्कतामेति भवेद्भूमिश्च चंचला ॥२६॥

अर्थः—जो ॐ ह्रीं मंत्र नहीं जानता वह रूठकर भी क्या करेगा, चाहै सागर सूख जाय पृथ्वी चल जाय ॥२६॥

पतेत्सूर्यश्च ह्याकाशान्नैव मिथ्या मनुर्मम ॥ यथैवेन्द्रस्य वज्रश्च पाशो वै वरुणस्य च ॥२७॥

अर्थः—आकाशसे सूर्य पतित हो जाय पर मेरे मन्त्र मिथ्या नहीं हैं जैसे इन्द्रका वज्र वरुणका पाश ॥२७॥

यमदण्डो यथाऽमोघो वह्निशक्तिर्यथा परा ॥ तथैव च महायोगाः प्रयुक्ताः शत्रुमारणे ॥ २८ ॥

अर्थः—यमका दण्ड और अग्निकी अमोघशक्ति है इसी प्रकार यह शत्रुमारणमें महाप्रयोग है ॥ २८ ॥

इसमें यत्न करनेसे सिद्धि होती है अशक्तोंको सिद्धि नहीं होती समर्थ पुरुष सिद्धिको प्राप्त होकर भूमिमें रुद्रकी समान विचरता है ।

अथ प्रयोग कहते हैं।

ॐ गंगणपतये नमः अनेन मन्त्रेण कुम्भकारस्य गृहान्मृत्तिकामानीय लम्बोदरं गणेशं कुर्यात् पंचोपचारेण पूजनं कुर्यात् सप्तदिनपर्यन्तं सहस्रवारजपेन शान्तिर्भवति ॥ सप्तादिकसहस्रेण बुद्धिं च लभते पराम् ॥ मासमेकं यदा कुर्यात्स्त्रीलाभोपि भवेद्ध्रुवम् ॥ २९ ॥ षण्मासेन वरारोहे धनपश्च भवेन्नरः ॥ ३० ॥

अर्थः—गंगणपतये नमः इस मन्त्रसे कुम्हारके यहांसे मृत्तिका लाकर लम्बोदर गणेशकी मूर्ति बनावे पंचोपचारसे पूजन करै प्रतिदिन सहस्र जपे तो सात दिनमें शांति होती है और सात सहस्रसे अधिक जपै तो परम बुद्धिको प्राप्त होता है एक महीने जपनेसे स्त्री लाभ होता है॥२९॥ छः महीने जपनेसे मनुष्य धनपति होता है ॥ ३०॥

ॐ ऐं नमः एतन्मंत्रवरं देवि प्रजपेद्विधिपूर्वकम् ॥ धूपं दीपं च नैवेद्यं श्वेतपुष्पैश्च पूजयेत् ॥ श्वेतगंधानुलेपनं कुर्यात् ॥ हविष्याशी जपेन्मंत्रं सप्ताहेन महेश्वरि ॥ बुद्धिं च लभते सद्यस्तथा स्मृतिवरामपि ॥ ३१ ॥

अर्थः—ॐ ऐं नमः इस मंत्रको विधिपूर्वक जपै धूप दीप नैवेद्यसे श्वेत पुष्पोंद्वारा पूजन करै श्वेत गंधकाही अनुलेपन करै तथा हविष्य अन्न भोजन कर मंत्र जपै तो एक सप्ताहमें बुद्धि और स्मृतिकी प्राप्ति होती है ॥३१॥

चालनं सर्ववस्तूनां चिरायुः सुखमेधते ॥३२॥

अर्थः—तथा सब वस्तुओंके चालनकी शक्तिको प्राप्त होकर वह चिरायु होकर सुख पाता है ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं नमः मंत्रेणानेन देवेशि सप्ताहं जपमारभेत् ॥ रक्ताम्बरधरो नित्यं तथा कुंकुममालिकः ॥ ३३ ॥

अर्थः—ॐ ह्रीं नमः इस मंत्रको एक सप्ताह पर्यंत जप करे लाल वस्त्र और कुंकुमकी रंगीन माला धारण करे ॥३३॥

सप्ताहं जपमात्रेण ह्यानयेदमराङ्गनाम् ॥३४॥

अर्थः—तो सात दिनके जपनेसेही देवांगना प्राप्त होती है ॥ ३४ ॥

ॐ क्षौं ह्रीं ह्रीं आं ह्रां स्वाहा । पूर्वोक्तेन विधानेन ह्ययुतं जपमारभेत् ॥ एकान्ते निर्जनस्थाने स्त्रियमाकर्षयेद् बुधः ॥ ३८ ॥

अर्थः—क्षौ ह्रीं ह्रीं आं ह्रां स्वाहा । पूर्वोक्त विधानसे

यह मंत्र १० सहस्र जपनेसे एकांत निर्जन स्थानमें स्त्री आकर्षित होती है ॥ ३५ ॥

ॐ नमः एतन्मंत्रं वरारोहे जपेत्तु दशलक्षकम् ॥ सर्वपापबिनिर्मुक्तो जायते खेचरः पुमान ॥३६॥

ॐ नमः यह मन्त्र दस लाख जपनेसे सब पापसे रहित हो आकाशगामी होता है ॥ ३६ ॥

ॐह्रीं ॐहुं हुं हुं ॐलक्षत्रयजपेन दूरदृष्टिर्भवति॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो जायते खेचर पुमान् ॥ ३७ ॥

अर्थः-ॐ ह्रीं ॐ हुं हुं हुं ॐ यह तीन लाख जपनेसे दूर दृष्टि प्राप्त होती है साधक पापरहित होकर आकाशचारी होता है ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रूँ ह्रां कालीकरालिनी ह्रौं क्षां क्षीं क्षौं फट् ॥ एतन्मंत्रं महेशानि जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ अजामांसैर्बलिंदत्त्वा रक्तपुष्पैस्तथैव च ॥ ३८ ॥

अर्थः-ॐ ह्रूँ ह्रां कालीकरालिनी ह्रौं क्षां क्षीं क्षौं फट् यह मन्त्र १०८ वार जपकर अजामांस और लाल फूलकी बलि दे ॥ ३८ ॥

श्मशाने तु जपं कुर्याद्बलिं चैव निवेदयेत् ॥ सप्ताहाभ्यन्तरेतस्यसिद्ध्यत्येव कपालिनी ॥३९॥

अर्थः—श्मशानमें जप करके बलि निवेदन करे तो सात दिनमें कपालिनी सिद्ध होती है ॥ ३९ ॥

यं यं प्रार्थयते कामं तं ददाति दिने दिने ॥ व्ययं कुर्याद्विशेषेण देवाग्नि गुरुसन्निधौ ॥ ४० ॥

अर्थः—जिस जिस वस्तुकी इच्छा करै वह सब लाकर देती है यह देवता अग्नि गुरुजन और ब्राह्मणोंमें खर्च कर दे ॥ ४० ॥

भूमौ स्थापनमात्रेण प्राप्यते न कदाचन ॥४१॥

अर्थः—यदि पृथवीमें गाडकर रखा जाय तो फिर नहीं देती ॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं क्षां लोहंभजकिलि २ स्वाहा अमुकं काटय २ मारय २ मातंगिनी स्वाहा । अनेन पूर्वाह्णे पंचोपचारैः पूजयेत् ॥ मासमेकंजपेन्मंत्रं सहस्रं च शताधिकम् ॥ सहस्रं सैनिकं हन्याच्चित्रमार्गेण तत्क्षणात् ॥ ४२ ॥

अर्थः—ॐ ह्रीं क्षां० इस मूलके मंत्रसे पंचोपचार द्वारा देवीका पूजन करे एक महीने यह मंत्र ११०० प्रतिदिन जपे वा एक लाख जपे तो विचित्रगतिसे सहस्र सेनाको मार सकता है ॥ ४२ ॥

ॐस्तंभय काली स्वाहा कपालिनी स्वाहा ॐ हुं ह्रीं क्षीं चैं ईषि बंधिनी ठः ठः । अनेन मंत्रेण मृत्तिकां सप्तवारमभिमंत्र्य चौरसंमुखे प्रक्षिपेत् अनुरक्तं च जायते । अयुतं प्रजपेन्मंत्रं सिद्धिं प्राप्नोति तत्क्षणात् ॥ ४३ ॥

अर्थः-ॐ स्तंभय काली० इस मूलमंत्रसे मृत्तिकाको सात वार अभिमंत्रित कर चोरके सन्मुख डाले तो वह अनुरक्त होता है दस सहस्र जपसे इसकी सिद्धि होती है ॥ ४३ ॥

ॐ ह्रीं क्षां क्षां क्षां क्षां क्षें क्षैं क्षौं क्षः । अथवा ॐ क्रीं क्षीं क्षं क्षं क्षें क्षैं क्षः । सूर्याभिमुखो भूत्वा प्रजपेन्मन्दिरे शुचिः ॥ व्याघ्रसिंहज्वरादीनां ग्रहाणां च भयं नहि ॥ ४४ ॥

अर्थः-ॐ ह्रीं क्षां० इस मूलमंत्रको सूर्यके सन्मुख मंदिरमें पवित्र होकर १० सहस्र जप करै तो सिंह व्याघ्र ज्वरग्रह और मनुष्योंसे भय नहीं होता ॥ ४४ ॥

ॐ हंसं हंसः एतन्मंत्रं महेशानि जप्त्वा विंशतिवारकम् ॥ अभिमंत्र्य पिबेत्तोयं स्वस्थो भवति मानवः ॥ ४५ ॥

अर्थः—ॐ हंसं हंसः यह मंत्र बीस बार जपकर इससे जलको अभिमंत्रण कर पिये तो प्रहारसे व्याकुल हुआ स्वस्थ हो जाता है ॥ ४५ ॥

ॐ ह्रीं मानसे मनसे ॐ ॐ ॐ। स्वाहा घृतदूर्वाभिस्तंदुलैः साकं होमेनास्य मंत्रस्य सिद्धिर्भवति वांछितं लभते ॥ ४६ ॥

अर्थः-ॐ ह्रीं मानसे॰ यह मूलमन्त्र जपनेसे घी दूर्वा चावलसे हवन करनेसे मनोवांछित सिद्धि होती है॥४६॥

ॐ अघोरेश्वरि घोरघोरमुखि चामुण्डे ह्यूर्ध्वकेशि ह्रां क्षां फट् स्वाहा अथवा ॐ घोरघोरस्वरे घोरमुखचामुण्डे उर्ध्वकेशी ह्रां क्षीं ह्रूं फट् स्वाहा (सर्वभूतदमनमंत्रः) ॐ सं सांसि सीं सुं सूं सें सैं सों सौं सं सः रं रां रिं रीं रुं रूं रें रैं रों रौं रं रः अमृतं ब्रह्मणे स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेणाष्टोत्तरशतं सेचनेन सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो भवति। वली पलितवर्जितो भवति। वर्षपर्यन्तं जपेन स्थावरजंगमादिविषं मक्षिकाव्याघ्रलोमादिकं पूर्वोदरस्थं भस्मीभवति शांतिर्भवति सर्वजनप्रियो भवति चिरायुर्भवति ४७

अर्थ :–ॐ अघोरेश्वरि० यह मंत्र सब उपद्रवको शान्त करता है यह मंत्र पढकर १०८ वार सेचन करनेसे सब व्याधि शांत होती है वली पलितसे रहित होता है एक वर्षतक जप करनेसे स्थावर जंगमादि विष मक्षिका व्याघ्रलोमादि जो कुछ उदरमें हो सब भस्म हो जाता है वह सब जनोंका प्यारा और दीर्घजीवी होता है ॥४७॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय ह्रीं ह्रूं ह्रः ह्रं फट् स्वाहा अथवा ॐ नमो भगवते रुरुक्षय हुं फट् स्वाहा॥ अनेन अयुतजपेन सर्वभूतडाकिनीयोगिनीनां दमनं भवति ॥ ४८ ॥

अर्थः–ॐ नमो भगवते० यह मूलमंत्र दशसहस्र जपै तो सब भूत डाकिनी योगिनी पलायन करती हैं॥४८॥

ॐ हुं प्रमोदयित्रि ह्रीं प्रचोदय ऐं ह्रं द्रं उं फट् स्वाहा। अनेन मंत्रेणसहस्रवारं जपेनाष्टोत्तरशतं मधुना होमेन कार्यसिद्धिर्भवति ॥ ४९ ॥

अर्थः ॐ प्रचोदय० इसमंत्रको सहस्रवार जपकर एक सौ आठ वार मधुसे होम करे तो कार्यकी सिद्धि होती है ॥ ४९ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं क्षं क्षां क्षि क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः हुं फट् ठः ठः (वा ह्रं ह्रं इत्यादि) प्राच्यां दिशि मुखं कृत्वा लक्षमेकं जपेन्नरः ॥ वैश्वानरसमो विप्रो जायते स न संशयः ॥ ५० ॥

अर्थः—ॐ ह्रां ह्रीं० इस मंत्रको पूर्वकी ओर मुख कर एक लाख जपे तो वैश्वानरकी समान होता है ॥५०॥

अयुतं जुहुयात् । घृतसमिद्धोमेन सिद्धिर्भवतिमेघालोकनमात्रेण मेघाः प्रणश्यन्ति न वर्षन्ति, सरिदादयः शुष्यन्ति यदि मेघो नष्टोभवेत् तर्ह्युदकमध्ये स्थित्वा मंत्रंजपेत् अनावृष्टिकाले महावृष्टिर्भवति ॥ ५१ ॥

अर्थः—दशसहस्र घृत और समिधियोंकी आहुति देनेसे सिद्धि होती है, यदि मेघोंको देखले तो मेघ नष्ट हो जाते हैं, नहीं वर्षते सरिता (नदियें) शुष्क हो जाती हैं, और यदि वर्षा न होती हो तो जलमें स्थित होकर जप करनेसे अनावृष्टिकालमें महावर्षा होती है ॥५१॥

ॐ प्रचलित स स क्रुं रें रें हुं ह्रीं हुं ह्रं किं स्वाहा ॥ वा प्रचलितं शशकरे ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं किं स्वाहा ।

कुमारीं संस्थाप्यायुतं जपं कुर्यात् त्रिकालवार्ता कथयति ॥ ५२ ॥

अर्थः-ॐ प्रचलित इस मंत्रको कुमारीको स्थापन कर १०००० जप करे तो त्रिकालकी बात कहती है॥५२॥

ॐ ह्रीं माजाते प्रयच्छ मे धनं स्वाहा। घृतयुक्त-सिद्धार्थानां सहस्राहुतिदानेन सिद्धिर्भवति। इक्षु-रसानुपातेन पार्थिवत्वं लभेन्नरः ॥ ५३ ॥

अर्थः-ॐ ह्रीं० इस मंत्रकी घी और सरसोंकी सहस्र आहुतिसे सिद्धि होती है और गन्नेके रससे लक्ष आहुति देनेसे इस मनुष्यको पार्थिवत्व। राज्यकी प्राप्ति होती है ॥ ५३ ॥

ॐ ह्रीं नमः सततं जपेन सर्वकामदो मंत्र ॥५४॥

अर्थः-ॐ ह्रीं नमः यह मंत्र निरन्तर जपनेसे सब कामना सिद्ध होती है ॥ ५४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमानसे सिद्धिं कुरु २ ह्रीं नमः। लक्षं जप्त्वा करवीरेण पूजयेत् सर्वकामदो भवति॥५५॥

अर्थः- ॐ ह्रीं श्रीं० यह मूलमंत्र एक लाख जप करनेसे पूजै तो सब कामना मिलती है ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रं अमुकं हन २ स्वाहा। कटुतैलेन संयुक्तं रक्तकरवीरं होमयेत्॥ अयुतं च जपं कुर्याच्छत्रु नाशयते क्षणात्॥ ५६॥

अर्थः–ॐह्रं० अमुकं हन २ स्वाहा। इस मंत्रसे १ हजार कडवा तेल और लाल कनेरसे हवन करै वा १ लाख जप करे तो शत्रुका नाश हो॥ ५६॥

ॐ ह्रीं लीं ह्रौं लैं हुं लौं हुं लौं हुं लौं हुं ह्रौं लः अमुकं ठः ठः। वा लं ह्रां लां ह्रों लों ह्रौं लौं ह्रं लों हों ह्रों लः अमुकं ठः ठः स्वाहा। अनेनमंत्रेण सिद्धार्थकानां होमं कृत्वा यस्य गृहे प्रक्षिपेत्स पार्श्वेभवति बाहुस्तंभोभवति शत्रुंनाशयति सैन्य-स्तंभो भवति। अश्वगजनराणां यथेच्छारी करोति॥ ५७॥

अर्थः–ॐ ह्रीं लीं० इस मंत्रसे सरसोंका १०००० होम करके जिसके घरमें यह भस्म फेकै वह समीपी हो जाता है, अनुकूल होता है इच्छा करनेसे बाहुस्तंभ होता है शत्रु नाश और सेनास्तंभ होता है हाथी घोडे मनु-ष्योंको इच्छानुसार चला सक्ता है॥ ५७॥

ॐ हूं हूं मुक्षे स्वाहा। वा ॐ रुरुमुखी स्वाहा॥
अनेन जलमभिमन्त्र्य मुखं प्रक्षालयेत् तिलतैलेन
वा सप्तत्रयेण दिनेन वशीकरणं स्यात् ॥५८॥

अर्थः—ॐ हूं हूं० इस मंत्रको २१ वार पढ मुख
धोवे वा तिलतेलसे उसका नाम ले मुख धोवे तो २१
दिनमें वशीकरण होता है ॥ ५८ ॥

ॐ मातंगिनि विमलमति करालि ह्रीं घे घः।
अष्टोत्तरशतं जातीपुष्पोपरि जपेन सिद्धिः अदृष्टं
वस्तु लभेत् वा ॐ मालिनी विललकराली ह्रीं
घं घः ॥ ५९ ॥

अर्थः—मातंगिनि० यह मंत्र जातीके पुष्पपर १०८
जपै तो सिद्ध हो २१ दिनमें अदृष्ट वस्तु मिलै ॥५९॥

ॐ पक्षि स्वाहा वृश्चिकमंत्रः ६० वा
ॐ द्रं जं क्षीं जं स्वाहा ॥ ६० ॥

अर्थः—ॐ पक्षि स्वाहा १०००० जपनेसे सिद्ध हो
२१ वार जपनेसे वृश्चिकविष उतरे ॥ ६० ॥

ॐ ह्रीं करालीं पुरुषमुखरूपा ठः ठः अनेनाष्टो-
त्तरशतजपेन कष्टरहितो भवति। जलमभिमंत्र्य

गोमहिष्यादयः स्तनलेपेन बहुतरं क्षीरं ददाति ॥ ६१ ॥

अर्थः–ॐ ह्रीं कराली० यह मंत्र १०८ जपनेसे कष्ट-रहित होता है और २१ वार जल अभिमंत्रण कर गोमहिषी आदिके थनोंपर लगावै तो बहुत दूध दें ॥६१॥

ॐ ह्रीं हंसः वा ह्रीं हंसः कुशेन मार्जनं कृत्वा सर्पविषं दूरे गच्छति ॥ ६२ ॥

अर्थः–ॐ ह्रीं हंसः इस मंत्रको पढकर कुशाओंके मार्जनसे सर्पका विष उतर जाता है ॥ ६२ ॥

ॐ ह्लं ह्लां ह्लिं ह्लीं ह्लुं ह्लृ ह्ले ह्लैं ह्लों ह्लौं ह्लं ह्लः ह्लीं ह्लुः हुः ठःठः वस्त्रलाभो भवति ॥ ६३ ॥

इति श्रीवीरभद्रतंत्रे मंत्र कोषो नाम प्रथमः पटलः ।

अर्थः–ॐ ह्लं० यह मंत्र पाठ करनेसे वस्त्रलाभ होता है ॥ ६३ ॥

यह वीरभद्र तंत्रका प्रथम पटल हुआ ।

ॐ हुं र सइ अमुकं फट्ट स्वाहा । अनेन खदिरसमिधं विषरुधिराक्तां कृत्वा सहस्रहोमेन महाज्वरेण गृह्यते ॥ १ ॥

अर्थः–ॐ हुं० खैरिकी समिध लेकर उन्हें विष और रुधिरसे जिस शत्रुका नाम लेकर हवन करै वह महा-ज्वरसे ग्रसित होता है इसका धूम अपने नेत्रोंको न लगै॥ १॥

ॐ रांरः रांरः स्वाहा अनेन ज्वररहितो भवति २

अर्थः–ॐ रां० इस मूलमंत्रके १ लाख पाठ से शान्ति होती है ॥ २ ॥

ॐ ऐं कालिकालि ऐं स्वाहा अनेन मंत्रेण अश्वत्थसमिधं घृतयुक्तां जुहुयात् सहस्रहोमेनावृष्टिकाले महावृष्टिं करोति ॥ ३ ॥

अर्थः–ॐ ऐं कालि० इस मंत्रसे पीपलकी समिधा और घीका हवन करे तो सहस्र हवनसे अनावृष्टिकालमें महावर्षा होती है ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं रम रम कालि ह्रीं स्वाहा। अनेन मंत्रेणाश्वत्थसमिधं घृतयुक्तां जुहुयात् राजा वरदो भवेत् पंचग्रामान् ददाति ॥ ४ ॥

अर्थः–ॐह्रीं रम० इस मंत्रसे पीपलकी समिधा और घीका हवन करै तो १ लाख आहुतीसे राजा प्रसन्न होकर पांच ग्राम देता है ॥ ४ ॥

ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा। तैलतिलयुक्तेन काकमां-
सेन शत्रोर्नाम गृहीत्वा सहस्रहोमेनोन्मत्तो भवति।
घृततंदुलानां सहस्रहोमेन शांतिर्भवति ॥ ५ ॥

अर्थः—ॐ ऐं ह्रीं इस मूलमंत्रसे तिल कडुवा
तेल कौएका मांस लेकर शत्रुका नाम ले सहस्र होमसे
शत्रु उन्मत्त हो जाता है फिर इसी मंत्रसे घी चावलके
सहस्र होमसे शांति होती है ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्य विद्ये वषट् २
स्वाहा। शुचिर्भूत्वा हविष्यान्नं भुक्त्वायुतं जपेत्
संध्याकाले पूजां कुर्यात् स्वप्ने त्रैकालिकं शुभा-
शुभं कथयति वर्तमानं जानाति वाॐ ह्रीं मानसे
स्वसुप्तबिम्बार्थविद्धो वद स्वाहा ॥ ६ ॥

अर्थः—ॐ ह्रीं मानसे॰ पवित्र हो हविष्य अन्नका
भोजन करता हुआ यह मंत्र १०००० जपै संध्या समय
पूजा करे तो रातके समय भूत भविष्य वर्तमानकी सब
बात शुभाशुभ विदित होता है ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं कुरु कुलैं स्वाहा। नागदमनी महाविद्या
महातीव्रास्ति अस्याः स्मरणमात्रेण डाकिनी

शाकिनी राक्षसा नश्यन्ति सर्वसिद्धीः करोति वै इति ॥ अथवा ॐ ह्रं कुर २ हे स्वाहा ॥७॥

इति श्रीवीरभद्रतंत्रे द्वितीयः पटलः ।

अर्थः—ॐ ह्रीं कुर० यह नागदमनी महाविद्या है इसके स्मरणमात्रसे डाकिनी शाकिनी राक्षस नाश होता है ॥ ७ ॥

यह वीरभद्रतंत्रका दूसरा पटल पूरा हुआ।

ॐ कामातुरा काममें स्वलपहि धोखनीलखनी असुकं वश्यं कुरु ह्रीं नमः अनेन मंत्रेण स्वभक्ष्य-द्रव्यं सप्तवारमामन्त्र्य सप्तदिनपर्यंतं मदनेन स्त्री वा पुरुषो वा वशीभवति ॥ १ ॥

अर्थः—कामातुरा० इस मंत्रसे अपने भक्ष्यद्रव्यको सात वार अभिमंत्रण कर सात दिन जो स्त्री पुरुष खाय तो वशीभूत होता है वा सात वार पढ लौंग देनेसे वशी-करण होता है ॥ १ ॥

ॐ जूं सः त्रिसंध्यं जपेत् शत्रुनाशो भवति ॐ जूं सः नित्यं जपेन मृत्युं जयति ॥ २ ॥

अर्थः—ॐ जूं सः यह मंत्र तीनों कालकी संध्याओंमें १ हजार जपै तो कुछ दिनोंमें शत्रुनाश होता है। तथा इसके नित्य जपनेसे अपमृत्यु नाश होता है ॥२॥

ॐ कंकाली महाकाली कालीकाली कलाभ्यां स्वाहा । सहस्रमत्स्यैर्जुहुयात् भगवती प्रसन्ना भूत्वा पलचतुष्कं सुवर्णं ददाति ॥ ३ ॥

अर्थः—ॐकंकाली० यह मंत्र पाठकर मत्स्योंसे सहस्र आहुति दे तो भगवती प्रसन्न होकर चार पल सुवर्ण प्रतिदिन देती है ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ईंनमः । अनेनायुतजपेन मासार्धेनाकर्षणं भवेत् ॥ ४ ॥

अर्थः—ॐ ह्रीं० यह मंत्र १०००० जपसे अर्धमासमें आकर्षण होता है ॥ ४ ॥

ॐ हुं ॐ हुं ह्रीं पूर्ववत् ५ वा ॐ ह्रों ह्रीं ह्रां नमः । आकर्षणं भवति ॥ ५ ॥

अर्थः-ॐ हुं ॐ हुं ह्रीं इस मंत्रसे भी पूर्ववत आकर्षण होता है ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं हुं हौं हुं हः सर्वज्वरनाशनमंत्रः । वा ॐ ह्रां ह्रीं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ ६ ॥

अर्थः-ह्रीं ह्रीं हुं हौं हुं हः इसके १०००० जपसे ज्वर नाश होता है ॥ ६ ॥

ॐ हूं नमः विधिना जपेत् पादुकासिद्धिः । वा ॐ नमः ॥ ७ ॥

अर्थः-ॐ हूं नमः । इसके विधिपूर्वक लक्ष जपसे पादुकासिद्धि होती है ॥ ७ ॥

ॐ क्षां क्षां ह्रीं ह्रीं फट् अनेन मंत्रेण वेतालसिद्धिः श्मशानेजपः १०००० ॥ ८ ॥

अर्थः-ॐ क्षां क्षां ह्रीं ह्रीं फट् यह मंत्र श्मशानमें १०००० जपै वेताल सिद्ध हो ॥ ८ ॥

ॐ हुं नमः ॐ ह्रीं नमः । नरतैलेन दीपं प्रपूर्य वर्तिकां कृत्वा नरकपाले दीपं प्रज्वाल्यांधकूपे श्मशाने वा शून्यालये जपेत् तत्र भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा कज्जलं नीत्वा नेत्राञ्जनेन सर्वे भूतादयो वश्या भवन्ति ॥ ९ ॥

अर्थः-ॐ हुं नमः ॐह्रीं नमः नरतेलको लेकर मनुष्यके कपालमें रखकरबत्ती डालकर दीपकबाले अंधकूप वा श्मशान वा शून्यस्थानमें मनुष्यकी खोपरी पर काजर पारता हुआ यह मंत्र १० हजार जपे भूतोंको बलि देकर

कज्जल ग्रहण करे इसको नेत्रोंमें आँजै तो सब भूतादि वशीभूत होते हैं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ईं लीं हुं हूं अमुकं हन हन खड्गेन फट् स्वाहा। गोमयेन साध्यस्य प्रतिमां कृत्वा श्मशाने नीत्वा याम्य मुखो भूत्वा विधिना जपेत् तत-स्तस्य शिरश्छेदं कृत्वा जुहुयात्। नष्टो भवति ॥ १० ॥

अर्थःॐ ह्रीं ह्रीं० यह मूलमंत्र जपकर गोबरकी शत्रुकी प्रतिमा बनाय श्मशानमें लेजाय दक्षिण ओरको मुख कर विधिसे यह मंत्र १० हजार जपै फिर उसका शिर-श्छेद कर हवन करै तो शत्रु नष्ट हो जायगा ॥१०॥

ॐ हुं हुं ह्रीं असुकं ठः ठः अनेन मंत्रेण लोहेश-लाकया विषरुधिरेण शत्रोर्नाम लिखित्वाऽयुतं जपेत् पश्चाद्भूमौ निक्षिपेन्मृत्युर्भवंति, ॐ हुं हुं ह्रीं वा पाठः ॥ ११ ॥

अर्थः—ॐ हुँ हुँ० इस मंत्रको पढ़ लोहेकी कीलसे विष रुधिर द्वारा शत्रुका नाम लिख यह मंत्र १ लाख पढ-कर भूमिमें गाड दे शत्रुकी मृत्यु होगी ॥ ११ ॥

ॐह्रीं कारी हुंकोरी क्षुंकारीफट्कारी रिपुहारी

कंकारी रेकपाली संविद्य वेधवर्द्धिनी वशंकरी महा-माये मम रक्षां कुरु २ ज्वर हन २ परस्याकर्षिणी मम शक्ति प्रसाधिनी शक्तिकं हं फट्र स्वाहा। अथवा ॐकारी हुंकोरी किमुकरो फट्रकारी खिकारी कंकारी कसाली पासावर्धि धेव धेनीवशंकरो महा-मायायै मम रक्षां कुरु कुरु ज्वरं हर हर आक्रो-शनं हन हन शंक्या कर्षणी मम शक्तिप्रसाधनी शक्ति कं हं फट्र स्वाहा। महाविद्यास्मरणेन सर्वें विघ्ना नाशमायान्ति निर्भयो भवति ॥ १२॥

अर्थः-ॐह्रींकारी॰ इस महाविद्याके स्मरण मात्रसे सब विघ्न दूर होकर जापक निर्भय होता है ॥१२॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ हं हं हं हं सः ९ अनेन स्थाव-रजंगमविषं नश्यति ॥ १३ ॥

अर्थः-ॐ ५ इस मंत्रसे स्थावर जंगम विष नष्ट होता है जप १२ हजार ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं अनेन विषं स्तंभयति ॥ १४ ॥

अर्थः-ह्रीं हूँ इस मंत्रको १२ हजार जपकर विष स्तंभित कर सकता है ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं क्षीं ह्रीं क्षां ह्रं हन २ फट्र वः वः अनेन ज्वरो नश्यति ॥ १५ ॥

अर्थः–ॐ ह्रीं क्षीं० इसके १२ हजार जपसे ज्वर जाता है ॥ १५ ॥

ॐ ऐं हं ऐं हं वद वद स्वाहा सप्ताधिकायुतं जपं कुर्यात् कविर्भवति ॥ १६ ॥

अर्थः-ॐ ऐं० इसके १० हजार सात जपसे कवि होता है ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं सः ह्रीं ठं ठं ठं शान्तिकरी विद्या ददाति क्षीरेण हवनं कार्यमष्टोत्तरशतशरव्यूहप्रचण्डैः १७

अर्थः–ॐ ह्रीं सः० इसके १२ हजार जपसे शान्तिकरी विद्या मिलती है दूधकी १०८ आहुति दे वा १०८ शरकी आहुति दे ॥ १७ ॥

ह्रां ह्रीं ह्रूं फट्र ठः ठः ठः ॥ नरास्थिकीलकं सप्तांगुलं कृत्वा सहस्रमभिमन्त्र्य यस्य गृहे निक्षिपेत् कुटुम्बेन सह तस्योच्चाटनं भवति उत्क्षिप्य शांतिर्भवति ॥ १८ ॥

अर्थः–ह्रां ह्रीं० मनुष्यके अस्थिकी सात अंगुलकी कील लेकर इस मंत्रसे सहस्र वार अभिमंत्रण कर नाम

लेकर जिसके घरमें डाले सकुटुम्ब उसका उच्चाटन होता है उखाडने वा वहांसे दूर फेंक देनेसे शान्ति होती है ॥१८॥

ॐ ऐं २ ह्रीं ॐ फं फं हं हं हं फट् स्मरणमात्रेण सर्वभूतसर्वग्रहाणां नाशो भवति ॥ १९ ॥

अर्थः–ॐ ऐं २ ह्रीं॰ इस मंत्रके स्मरणमात्रसे सब भूत ग्रहादि नष्ट होते हैं ॥ १९ ॥

ॐ हं ॐ सः संततिदायको मन्त्रः सर्वदा स्मर्तव्यः ॥ २० ॥

अर्थः–ॐ हं ॐ सः इस मंत्रको सदा स्मरण करनेसे संतान होती है ॥ २० ॥

ॐ ठं ठां ठिं ठीं ठुं ठूं ठें ठैं ठों ठौं ठं ठः अमुकं हूं हूं। अनेन सप्तांगुलवटकीलकं सहस्रवारमभिमंत्र्य नाम गृहीत्वा यस्य गृहे निखनेत्स पतितो भवति ॥२१॥

अर्थः–ॐ ठं ठां॰ इस मूलमंत्रसे सात अंगुल वडकी कीलको सहस्र वार अभिमंत्रण कर अमुकके स्थानमें शत्रुका नाम ले जिस शत्रुके घरमें गाडे वह पतित होता है ॥ २१ ॥

ह्रीं नं नां निं नीं नुं नूं नें नैं नों नौं नं नः हुं हुं फट् ठः ठः अनेन चतुर्दशांगुलमर्ककीलकं गृहीत्वा सहस्रमभिमंत्र्य यस्य गृहे निखनेत्स सकुटुम्बो ज्वरेण गृह्यते ॥ २२ ॥

अर्थः-ह्रीं नं नां० इस मंत्रसे १४ अंगुलकी आककी कील लेकर सहस्र वार इस मंत्रसे अभिमंत्रण कर जिसके घर में गाडै उसके कुटुम्बको ज्वर आवै उखाडै तो शान्त हो ॥ २२ ॥

ॐ हं हं वां ह्रं ह्रं ठः ठः अनेन चतुरंगुलं काकास्थिकीलकं गृहीत्वा सहस्रमभिमंत्र्य यस्य गृहे निक्षिपेत्तस्योच्चाटनं भवति ॥ २३ ॥

अर्थः-ॐ हं हं० इस मंत्रसे चार अंगुलकी कौएकी अस्थि लाकर सहस्र वार अभिमंत्रण कर जिसके घरमें डालै उसका उच्चाटन हो निकालनेसे शान्त हो ॥२३॥

ॐ ह्रीं कामिनी स्वाहा । अनेन घृतामिषस्य होमं कुर्यात् वाक्सिद्धिर्भवति ॥ २४ ॥

अर्थः-ॐ ह्रीं० इस मंत्रसे १२ हजार घृत आमिषका होम करनेसे वाक्सिद्धि होती है ॥ २४ ॥

ॐ अरविन्दे स्वाहा । अनेनायुतजपेन कर्णपिशाचिनीसिद्धिर्भवति ॥ २८ ॥

अर्थः—ॐ अरविन्दे स्वाहा। इसके १० हजार जपसे कर्णपिशाचिनी सिद्ध होती है ॥ २५ ॥

ॐ हुं खं खां अमुकं हन २ ठः ठः अनेन झाऊकाष्ठं कटुतैलेन सह होमयेत् । अयुतहोमेन सर्वशत्रुनिपातो भवति ॥ २६ ॥

अर्थः—ॐ हुंखं खां० इससे झाऊकी लकडी और कडवे तेलसे १० हजार होम करे तो सब शत्रुनाश हो असुकके स्थानमें शत्रुका नाम ले ॥ २६ ॥

ॐ नमो भगवति रक्तपटि नमः । रक्तवस्त्रं परिधाय सहस्रं जपेत् सप्ताहाद्रक्तवस्त्रलाभो भवति ॥२७॥

वीरभद्रतंत्रं सम्पूर्णम् ।

ॐ नमो भगवति० मंत्र लाल वस्त्र पहरकर सात दिन जपे तो लाल वस्त्र मिले ॥ २७ ॥

इति वीरभद्रतंत्रमें मंत्राधिकार पूरा हुआ ।

द्वादशाख्येराशिचक्रे कूटषण्डविवर्जितान् ॥ आदिहान्तान् लिखेद्वर्णान् पुरतो यावदीश्वरम् ॥ सिद्ध-

साध्यसुसिद्धारीन्पुनः सिद्धादयः पुनः ॥ नवैक-पंचमे सिद्धः साध्यः षड्दशयुग्मके ॥ सुसिद्ध-स्त्रिसप्तके रुद्रे वेदाष्टद्वादशे रिपुः ॥ सिद्धः सिद्धयति कालेन साध्यः सिध्यति वा न वा ॥ सुसिद्धस्तत्क्षणादेव शत्रुमूलनिकृंतनः ॥

अःट भ २ अंट वक्ष ३	अ क ड म १	आ ख ढ य १२ इं ग णर ११
औ ञ फ ल ४	अ क ड म चक्र	ई घ त ळ १०
ओ ज प ह ५ ऐ ञ न स ६	ए छ प भ ७	उ ङ थ व ९ ऊ च द श ८

अर्थः—बारह कोठेका चक्र लिखकर उसमें मेषादि

१२ राशि लिखे ऋॠऌॡ अक्षर न लिखे फिर कका-रादि एक एक वर्ण एक एक घरमें लिखे जबतक वर्ण पूरे हों इसी प्रकारसे लिखे सो चक्रमें समझ लेना। मन्त्र ग्रहणकरनेवालेके नामके प्रथम अक्षरसे मंत्रके प्रथम अक्षर तक दक्षिणावर्तमें सिद्धि, साध्य, सुसिद्ध और शत्रुकी गणना करे ९। १। ५ आवे तो वह मंत्र अपनेको सिद्ध जानना ६। १०। २ आवे तो साध्य जाने ३।७।११ मेंसे कोई अंक हो तो सुसिद्ध। ४। ८। १२ में कोई अंक हो शत्रु जानना सिद्ध मत्र समयपर सिद्ध होता है साध्य सिद्ध हो वा न हो शत्रुमंत्रको नहीं जपे, और सुसिद्ध मंत्र तत्काल शत्रुको नाश करता है। इस प्रकार का ज्ञान करनेमे मंत्र सिद्धि होती है।

अथ परकायप्रवेशमंत्रः।

ॐ नमो शून्य शून्य महाशून्यमें ब्रह्मा ब्रह्म ज्योत ज्योत सों नाद उपाया, शून्यनादशून्यमें समाया, मरे न औतरे तिस कारण अलखने लखाया ॐ ओं। इति मन्त्रः॥

विधि—जो कोई उत्तम जीव मृतक हुआ होय उसे स्नान कराय सुगंध आदिसे पूजे सांगोपांग ठीक करके

उभारले उसके मुखसे मुख लगाय पीछे जीव पवन योगसे उसके मस्तकमें चढावे तीन बार इस मंत्रका जप करनेसे पवनके साथ जीव ब्रह्माण्डमें चला जाय, वह मृतक चैतन्य होय अगला खलका छुट परे इति विधि गुसांई रामगिरिकी दया होय ।

अथ शिलौदकप्रकाशो लिख्यते ।

ईश्वर बोले शिलोदक प्रकाश चार जात का है श्वेत, पीत रक्त, श्याम, । फिर इसके दिन भेद, पल भेद, टीकाभेद, मासभेद, छः मासभेद, वरस मास भेद उस पानीमें काष्ठ पडे तो पाषाण होय उसको आवर्त चलतेको नल स्थिर जल ग्रहण करे ।

जलग्रहणमंत्रः ।

ॐनमो देवदेवाय श्रीकेशवाय नारसिंहाय नमो नमः ठःठः कुरु २ स्वाहा । इसका जप ५ हजार करे दशांश होम करे पंच खाद्यका होम करे गंधक ५ टंक इसको शिलोदकसे खरल कर मर्दन कर कटेरीके फलमें भर शिलोदकमें रक्खें जब पाषाण हो जाय तब निकालकर इस गुटिकाका चूरा करे इससे वंगभेद होता है १

चावल प्रमाण खाय तो सहस्त्र हाथियोंका बल और सहस्त्रवर्षकी आयु होय। यह चूर्ण घी और शहतसे खाय तो वज्रदेह होय ॥ १ ॥

शिलोदकमें पारा पांच टंक डाल उसे हांडीमें यंत्र कर तीन दिन पकावै तो गुटका बंधे तब उसे महुए के डोरोंमें रक्खै पीछे मंत्र जपै जो कार्य चाहै सो वर पावे अथवा गुटकेका चूर्ण कर उसमें ५ टंक सोनामक्खी डाले इस चूर्णके खानेसे सहस्त्र वर्ष जियै इसका नाम चिन्ता-मणि रस है। अथकल्पविधि। पारा ५ टंक, आमला-सार गंधक ५ टंक यह शिलोदकमें खरलकर रींगनी कटेरीके फलमें जब यह शिलोदकमें पाषाण हो जाय तो निकाल कर इस गुटकेका चूर्ण करै वंगवंधै चावल प्रमाण खाय तो सहस्त्र हाथीका बल और सहस्त्र वर्षकी आयु होय, कामित होय; घृत शहतसे यह चूर्ण खाय तो वज्र की देह होय ॥ २ ॥

लोहचूर्ण २१ सेर लेकर शिलोदकमें गाडदे पाषाण होय तब निकालले चूर्ण कर चावलप्रमाण शहत घीसे खाय तो सहस्त्र नागोंका बल होय ॥ ३ ॥

शिलोदक पारा ५ टंक लेकर खरल करै फिर इसको अजामूत्रमें खरलकर उसके सहितशिलोदकमें धरै जब पाषाणहोय तब निकालकर फिर एक दिन खरल करै और इसके प्रमाण फिर इसमें शुद्ध पारा मिलाय अजामूत्रके साथ शिलोदकमें रक्खे पाषाण होय तब निकालले इसे मुखमें रखकर यात्रा करे तो शीघ्र पहुँचै थकै नहीं इसका नाम उड्डियान गुटिका है ॥ ४ ॥

शिलोदक पानी २२ सेर गौका दूध १८ सेर इसका मावा करै पांच टंक खाय तो सहस्र वर्षकी आयु होय, इसको सावधानीसे सेवन करता रहै ॥ ५ ॥

पारा ५ टंक आककी लकडीमें भरकरशिलोदकमें धरै, पाषाण होय तब काढलेकै साथ वह गुटिका और शिलोदक जल तुम्बीके पात्रमें धरले इसको घुडवचके साथ तीस दिन पीनेसे सहस्र वर्षकी आयु होय ॥६॥

पारा ५ टंक गौके नैनी मक्खनमें खरल करै सुरह गौके बाल ६ टंक तम्बोल ५ टंकमें खरल कर शिलो-दकमें डाल दे जब पाषाण होय तो निकालले मुखमें रक्खे तो बडा बल होय उत्तर गमन शीघ्र होय, यह उडन्त गुटिका है ॥ ७ ॥

रूपा सोना १ तोला, पारा ४ तोले, यह शिलोदकमें खरलकर शीशेकी डिब्बीमें रखकर उसीका ढक्कन दे शिलोदकमें रक्खे जब पाषाण होय तब निकालले यह सहस्त्रंवगवेधक है इसके सेवनसे दीर्घ आयु और राजश्रेष्ठ होता है ॥ ८ ॥

गिलोय ४ टंक हरताल ४ टंक मनसिल ४ टंक आमलासार गंधक ४ टंक। सब एकत्रकर खरलकर शिलोदकमें डालदे पाषाण होनेपर निकालले इससे सब धातुओंका वेध होता है ॥ ९ ॥

इसी प्रकार लोहचूर्णको खरलकर कांसीमें रख शिलोदकमें डालै पाषाण होनेपर निकालले यह सब धातुको वेधता है ॥ १० ॥

पारा शालिके चावल २१ सेर शिलोदकमें रांध कर खाय तो नींद न आवे शिलोदक पिये तो भूख न लगे (वा कुएके धोरे उगे हुए चावल) ॥ ११ ॥

करैलोंके १८ सेर पत्ते शिलोदकमें २१ दिन रक्खे इसको पहर दिन चढे सेवन करै तो कोई रोग न व्यापै १२

नारंगीके पत्ते ५ सेर शिलोदक १ सेर एकत्रकर २१ पहरतक इसे उताकर प्रति दिन खाय तो निद्रा न व्यापै १३

घीकुवारकी जड दो सेर, शिलोदक सात सेर इसको औटावै जब एक सेर रहै तो उतार लीजै प्रतिदिन एक मासा खाय तो कामकी पूरी वृद्धि होय ॥ १४ ॥

शिलोदककी प्राप्तिही कठिन है यह जहां मिले तहां जाय इसकी खोज, कल्याणगिरि पर्वतपर करनी, तथा सीरोजपर्वत, सिरजापर्वत, विद्यापर्वत, गोपाचल पर्वत, नागपर्वत (शीतके पर्वत), लोहगिरि, विंध्याचल सुलेमानीतीरथ. गुजरातकी ओर के मालपर्वत, इन माल पर्वत, शीवप्रधान पर्वत, रंग पर्वत और भी पर्वतोंमें होता है खोजसे प्राप्त हो सकता है ॥ १५ ॥

इति शिलोदक सम्पूर्णम् ॥

अथ सरस्वतीमंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनि भगवति अर्हन् मुखनिवासिनी सरस्वति ममांशे प्रकाशं कुरु २ स्वाहा ऐं नमः ।

विधिः । दिवालीकी रातको पवित्र होय स्नान कर उत्तरको मुख कर श्वेतमाला श्वेत वस्त्र धारण कर श्वेतमूर्ति भगवतीकी स्थापन कर तंदुल सन्मुख धर १२ हजार मंत्र जपे तो सरस्वती प्रसन्न होय ॥ १ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं कमलधारिणी शांति धृति कीर्ति कांति बुद्धिलक्ष्मी ह्रीं अप्रतिमचक्रे फुट्विनक्राय स्वाहा। दिवालीके दिन पवित्रधरती लीपकर अखण्ड १२ हजार जप करे पंचोपचारसे स्वरचक्रेश्वरीकी पूजा स्थापना कीजे चावलकी खीर बनाकर खाइये एकही वार भोजन कीजे तो लक्ष्मी प्रसन्न होय, दिवालीके पीछे भी इसको नित्य जपै ॥ २ ॥

ॐ सिद्धराजा अजैपालकोटपली गाय सवा लाख पर्वत चखजाय जिन जायेवच्छदो वच्छा दोय वच्छकाई चुगै सपीडकाफियो करो हीकाल जो चुग्गा न चुगै तो राजागोरखनाथकी दुहाई आठ अंगुलकी सांटी लीजै, गांठवाली गौ लादीजै शहत लगाय गोला दे यह मंत्र २१ वार पढै तो गौ खाने लगे न खाती होय तो न खानेका रोग जाय ॥ ३ ॥

बवासीरकी औषधि। कालीमिर्च २ टंक, कटेहरीके बीज २ टंक, हींग २ टंक, सुहागा दो टंक, आमलासार गंधक २ टंक यह मिलाय कडुवे तेलकी धूनी ले और तीन दिन कपिलाके मट्ठेकी कांजी पीवे, तथा भंग और

गुड़कीटिकिया करके गुदके मूलद्वारमें तीन दिन रक्खै तो बवासीर जाय ॐघोर घंटे स्वाहा ॥ यह मंत्र दशसहस्र जपै तो बेड़ी झड पडैं अथवा जपावै तो वन्दीसे छूटै ॥४॥

ॐ नमो भृगगटमुखी स्वाहा। ७ वार मंत्र जपै ॥५॥

जो बालक दूध न पीवै यह मंत्र पढके उसकी कन-उंगली थामें पीछे थालीमें थुकावै थालीमें लोहू थुके तो शाकिनी दोष जानै अमलकी औषधी अफीमके फल १ सेर कुला (कुडा) आधासेर इन दोनोंको गाढा पीसके कनगच (धतूरे) की मीग आकका दूध आधा सेर यह लाखका पानी डालकर औटावै इसमें अलसीका तेल २ पैसेभर डालै इस प्रकारसे गाढा करै जिसमें गोली बँध-जाय तेलसे बहुत छोटी गोली बांधै यह बडे नशेबाजों का नुसखा है ॥ ६ ॥

धातबंधकी औषधी- आमला ४ टंक गोंद ४ टंक पीस गुड़में घोलकर पियेतोधातबन्द हो ॥ ७ ॥

जिसकी पसलीमें वात होय अर्थात् पसलीमें दर्द होता होय यह यंत्र पसलीपर बांधने से पसलीकी पीर जाय

८	१	४६	४१
४२	४५	४	५
२	७	४०	४७
४४	४३	६	३

तथा बालककी पसलीपर बांधनेसे उसको भी आराम होय ॥ ८ ॥

जिसकी नाकसे लोहू निकलता होय उसकी औषधि-दाडिमीके दाने दहीके साथ खाय तो रुधिर जाता हुआ थमें वा घी मिश्रीका नास दे तो थमें ॥ ९ ॥

नित्यछरदी होती होय तो उसकी औषधि-हर्र सैंधा अजवायन तत्ते पानीसे दे तो छरदी जाय ॥ १० ॥

इस यंत्रको भोजपत्रपर जिसका नाम लेकर लिखे तो वह वशीभूत होय इसको लिखकर तलावमें रक्खे ॐ नमो हनुमंत वीर स्तंभय २ अग्नि उलंघै शिवमंत्रगुरु की शक्ति ह० फुरोमंत्र ईश्वरोवाच पानीमंत्र ॥ ११ ॥

बवासीरका मंत्र १०८ जपे बवासीर जाय ॐ नमो
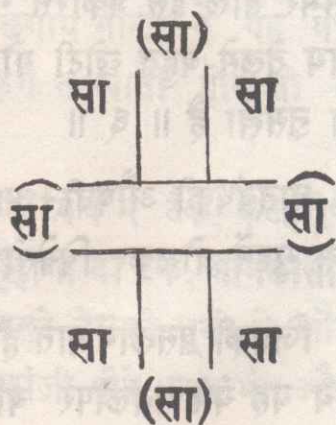
आदेश गुरुको अकरकई ऋषी रोपी ढंकम्। जो जो यह मंत्र जाने उसके न होय और जो यह मंत्र जानकर प्रकट न करे तो गऊ ब्राह्मणकी हत्या लगे जो मंत्र पढा न जाय तो मुनि अगस्त्यकी हतया फरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १२ ॥

ॐ कामरूदेश कामाक्षी देवी जहां वसे इसमाइल जोगी इसमाइल जोगीवोई फूलन कियारी, फूल बीने लौनाचमारी, फूल हसे फूलवसे फूलनमें बीर नृसिंह वसे जो ले इस फूलकी वास सो रहे हमारे पास हमपै छुटके और पै जाई तो कामाक्षी देवीकी दुहाई शक्ति मेरी भक्ती गुरुकी १ मंत्र पहरू हनूमान् मैं चेला तेरा वाट घाट मैं फिरूँ अकेला झपकी वोरी हाथकुतंगा जो आवे मेरे पास उसकी गाड वज्रकी किलासाज वह इला फूटी कूसा जीकर सांचा मंत्र ईश्वर वाचा नारा टूटे पारचा ॥१३॥
ॐवज्रहस्तो महाकायो वज्रपाणिर्महेश्वरः। ताडितो बज्रदण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वर ॥ १४ ॥

अर्थः-यह मंत्र १०८ वार पढकर नागरबेलपान खाय तो उसीदिन इकंतरा ज्वर जाय ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं कंकाली काली मधुमत्ता मातंगी मद-विह्वलीमनमोहिनी मकरध्वजे स्वाहा १ यह स्नानका मंत्र है इससे स्नान करे तो काँती बढे ॥ १५ ॥

ॐनमो हनुमंता बलवन्ता हाकन्ता हाहाकार करन्ता भूत प्रेत बाधन्ता दृष्टि मुष्टि बाधंता मेरा वैरी, तेरो भक्ष पकड लाव वेग लाव मुख बुलाव न लावे तो राजा राम-चन्द्रकी दुहाई माता अंजनीकी दुहाई ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंताय दुष्टदमनाय वशीकराय फट् स्वाहा ३ यह तीनों मंत्र स्नान करनेके हैं ॥ १७ ॥
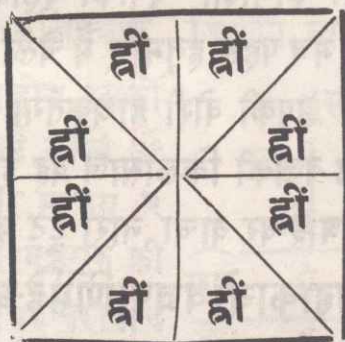
यह मंत्र अष्टगंधसे भोजपत्र पर लिख स्नान तळे रक्खे।

गणेशदेवताका मंत्र वं सं षं सः ६ हजार जपै प्रसन्न

होय ४। श्रीब्रह्मदेवताका मंत्र यं भं मं छं लं ६ हजार जपसे ब्रह्माजी प्रसन्न होय ॥ १८ ॥

श्रीरुद्रनाथ देवताका मंत्र कं रं वं धं उं चं जं जं ॐ टं डं ६ हजार जप है ॥ १९ ॥

श्रीविष्णु देवताका मंत्र ॐ ढं णं तं दं नं पं फं ६ हजार जप है ॥ २० ॥

श्रीजीवदेवताका मंत्र अं आं इं ईं युं यौं युं युं भ्रां भां यं यौं ओं औं अं अः १० हजार जप है ॥ २१ ॥

श्रीहंसदेवताका मंत्र हं सं १० हजार जप ॥२२॥

चंद्रदेवताका मंत्र हं हं हं हं हं हं जप १ हजार २१ हजार जप भोगी योगी कोई जपे विष्णुलोक को जाता है ॥ २३ ॥

ॐ श्रीरामानुजायः नमः। ॐकारबारहयोजन कोटि यंत्र अवनी बैठो वन। इस विधिसे जपो मरणका आगल टूटो मारग मुक्त भया जहां गई त्रिगासा। ब्रह्मा ले उपजी गायत्री ब्रह्मा ले कथी उपजे देव महेश। गायत्री गोविंद कथी सतगुरुके उपदेश मुखी सरस्वती अग्रभई हियसांचा चीन्हीं घटमें भई अलोप काढि प्रगट हम कीन्ही। विया श्री

पुराण अष्टमुनि सिद्धौ सिद्धकराई ब्रह्मा मुखीं ब्रह्मानी। पुत्रदाता; फलदाता, विद्यादाता, मुक्तिदाता रोगको दूर करती, विधिसे समर जितावती, आकाश युग तारणी शंखिनी आदिसे उद्धारती, पातालवासिनियोंकी अधीश्वरी जाको खुरासान खुरमोला, पेट सब जम्बू मंडल मुख गंगा प्रवाह लांस अपनो संभल, रोम अठार हमारा ताराकंप तारागण माला रणो अलख रूप सोगयऊं आये वेधी हम धर्मशाला नेता रवि शशि तारा कनक कन्दला समजानो महापुरुष जिन धोये पांव, ले पहुंची वैकुण्ठनाथ पृथ्वीनाथ अजपा गायत्री अजपा जापसे पाप मिट जाय, संत गुरु शब्द कह्यो समुझाय पाप हरती पुण्य करती ब्रह्म विद्या समासमि। इति अजपा गायत्री माहात्म्य संपूर्ण ॥ २४ ॥

ॐ वज्रहस्तो महाकायो वज्रपाणिर्महेश्वरः ॥ ता श्रीगुरु रामानन्दकी पादुकाको प्रणाम। ताडिता वज्रदण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वर ॥ पानको इस मंत्रसे १०८ वार जप कर खाय तो तिजारी जाय ॥ २५ ॥

ॐ नमः मंत्रसिद्धिका। समुद्र समुद्र दीपमें टापू टापूमें

फटिकशिला फटिकशिला ऊपर कुकवाका वृक्ष, उसके नीचे वज्रयोगिनीकी गुफा वज्रयोगिनीकी गुफामें वाघनी व्याई वाघनीके पुत्र दो हुए एकका नाम नृसिंह, एकका नाम हरसिंह २ विद्या उपाई नृसिंह, लिया बुलाई एक खील खुटेवा पठाया एक खील चौदिसाका गुलाया, कौन २ गुलाया नवीन गुलाया खूरासान बुलाया २ सिंह शार्दूल ३ श्वेत सुनहरी, ४ जटाल ५ लटाल ६ पटाल ७ उटीया ८ लौहिय ९ पोहिया १० रोजिया ११ गधैया १२ भेडिया १३ अधलेडिया १४ चीतिया १५ बारह जात अठारह कुलीके सिंह एक कोसका बुलाया दो कोसका आया । दो कोसका बुलाया चार कोसका आया चार कोसका बुलाया आठ कोसका आया आठ कोसका बुलाया छेदनी बारह कोसका आया बारहकोस पूर्व १२ बारह पश्चिम बारह दक्षिखन बारह उत्तर नदी-नालेका आया खेड खोचरका आया । गिरिपर्वतका आया, डरे डाबरेका आया सडे मसानका आया, वाट घाटका आया, गडी गुफाका आया, रूख वृक्षका आया, बांसके वीडेका, घाँसके कूचेका आया, गोबरकी चोथीका

आया, जहां जहांसे आया हाथ पांव उपाडता आया, मुख बावता आया, भवा हाथ धरती भिजोवता आया, जा २ मारपटक पछाड मारके कलेजा चाखना चोखे ता कुमारीकन्याके पातकमें पांव डालेगा लोना चमारीके कुण्डमें पडे, धोबीकीनांदमें पडे, ढेढके खप्परमें खाय, गोरखका दण्ड तोडे ब्रह्माका जनेऊ तोडे महारुद्रका त्रिशूल तोडे, विष्णुका खड्ग मोरे, अगला पाव पिछला पांवसे कीलौं पुलट ऊपरकी डाढ तलेकी डाढसे कीलूं जो मोसे करेगा रार मेरे चेलेसे करेगा रार जो मेरे गुरुसे करे रार मेरे जातिसे करे रार तो कारी कन्याके पातकमें पांव डाले गोरखका दंडा तोडेगा, ब्रह्माका जनेऊ तोडेगा, विष्णुका खड्ग तोडेगा, शिवका त्रिशूल तोडेगा, वाचा चूके तो खडा हुआ सूखे वाचा चूक तो वाघनीका दूध हराम, बाघनीकी सज्यापे पग धरे सिताबी न आवै तो माताका दूध हराम सितावी न आवै सो नौ नाथ चौरासी सिद्धकी वाचा चूक झूंठी पडे गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरोमन्त्रः । विधि यह मंत्र इक्कीस दिन २१ हजार इक्कीस सहस्र जपे सद्धकी मूर्ति बनाय दीपक धर पूर्वको

मूर्तिकासुखकर धूप दीपसे पूजाकर जप करे, तो यह मंत्र सिद्ध होकर बलकी प्राप्ति होती है यह मंत्र पढकर तिलक करे सब भय मानै, हाथ लगायेसे भूत प्रेत भागें ॥२६॥

ॐ नमो आदिपुरुषकी नृसिंहकी कीलन लिख्यते । ॐ पूरव दिशा दहेरा, पच्छिम दिशा द्वार, तहँ नृसिंह वीर लिया प्रकाश गवरा कातै ईश्वर वरै ईश्वर बुनै जाल तिसकी बांधू छत्तीस डाढ कौन २ सिंहली सुनहरी सिंह शार्दूल जटाल पटाल लटाल उडिया, लोहिया, रोजिया, गधैया, भेडिया, अंधलेढिया, चीतिया, भूरा वेसरा १२ बारह जात अठारह कुलीके सिंहले बांधू पुँच्छले पाताल बांधू जिह्वाले आकाश बांधू अगला पांव पिछला पांवसु बांधू पिछला पांव लगता पांव सु बांधू जिह्वाले आकाश बांधू ऊपरका दांत सु तलेका दांत सु बांधू, तलेका दांत ऊपरका दांत सु बांधू जिह्वाले आकाश बाँधू जोगीकी नाद बाँधू संन्यासीका चंख बाँधू कुल्हाणीका खटका बांधू ढोलका ढमक्का बांध गाईकी रांभ बांध छलीकी छिकार बांधू, ऊँटकी रगार बांध, घोडेकी हींस बांधू, मुरगेकी कूक बांधू, कूकरकी भौंक बांध रईका खरका बांधू, येती

ना सुने पीछे घाव करैं तो लौना चमारीके कुण्डमें परै, एक धनुष पंच बान उलट आवै तो ज्योतिस्वरूपकी आन वाचा चूकै वाघेश्वरीका दूध हराम करै, नतेली सौतेली बहन भानजीकी सेजपर पांव धरै पार्वतीका चीर चौधा (छुरा) अजरा जर विकाल बांध हाल चाल हाव करे तो ज्योतिस्वरूपकी अनदुहाई यह बन छोडके और वनमें जाय वे हर वनका हिरना राज मार २ खाय फुरो मंत्र फट् स्वाहा शब्द साँचा पिण्ड काचा ॥ २७ ॥

ॐ जत जत उग्र नृसिंह, बळ वीर भीषम जटा कोट फांद चले गगन मेघमाला अपरबल भुज दण्ड प्रचंड नख मुख करत विकराल भक्त प्रहलाद हेत प्रगटे नृसिंह, महानादकारी फिरे अष्ट और मेदनी द्रवत सारी, जतारकटूछुरीधार, भुम्भृकुटी विराज रूपकी पड त्रिया नैन बिराज दुष्ट चल मुष्ट चल डंकनी संखनी नागिनी बाघिनी भूतवेताल यमदूत शत्रु वैरी संघारकारी सेव अलील शिखर मध्ये सेव मारकंडे जगन्नाथ भयभंजन मुरारी ॥ २८ ॥

ॐ नमो देवी कामाक्षिके त्रिशूल खड्गहस्ते पादा पातिल गरुड सूर्य भक्षयित्वा तव पर्वते समागतस्ततो चिन्तामणि नृसिंह चल २ पवनकोटी कात्यायिनी तासु प्रसादके ॐ ह्रां ह्रीं क्लौं त्रिभुवन चालय २ स्वाहा। इस

मंत्रको २१ वार वा १०८ वार प्रतिदिन जपै और इससे वस्तुको अभिमंत्रण करनेसे मनुष्य मेधावी बुद्धिमान् होता है नीचे लिखा मंत्र रविवारके दिन नीमरस और हलदीसे शिला पटमें लिखनेसे शत्रुमुख स्तंभित होता है। इस यंत्रके देखतेही शत्रुकी बुद्धि नष्ट होती है ॥

यह नीचे लिखा यंत्र धरती पर लिख जूतेसे कूटे तो प्रेत निकले ॥ २९ ॥
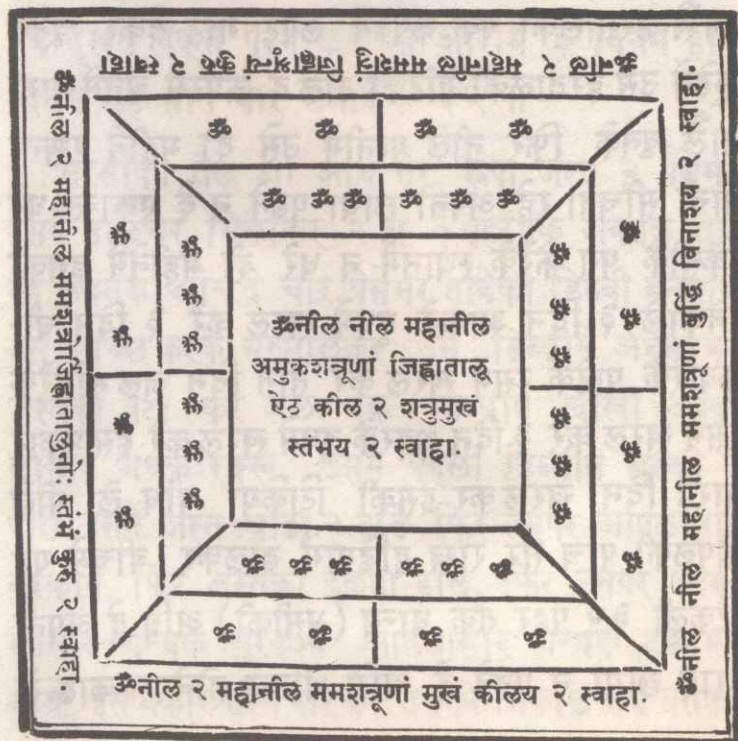
५७५ दुन दन ३६५६९६

यह यन्त्र घोडेके खुरके नीचे नाम लिखकर अग्निमें तपावे तो सात दिनमें परदेश गया घर आवे ॥ ३० ॥

हरतालमारणविधि—पहले हरताल सोधै हरताल बुगदादी दो पैसेभर कलई चूना ८ सेर कोरे कूंडेमें चूना रक्खै हरतालको एक कपडेमें लपेट गांठ देकर चूनेके कूंडेमें उस हरतालकी गांठको डाल दे ऊपरसे चूनमें पानी डालै चूनेके फिर नीले पानीमें उसे दो महीने रखना पानी सींचता रहे अपनी छाया पडने न दे एकान्त धरे किसीके पग फेरेके स्थानमें न धरे दो महीनेमें इसको निकाले ३ दिन आकके दूधमें खरल करे ३ दिन घी-कुवारके पाठेके रसमें खरल करे तीन दिन जलभांगरेके रसमें खरल करे ३ दिन थूहरके दूधमें खरल करे इस प्रकार बारह दिन खरलकर इसकी टिकिया बांध ले पीछे पीपलकी पांच सेर राख हंडियामें डालकर बीचमें यह टिकली ३२ पहर तक धान्य (भूसीकी) अग्नि दे अपनी पराई छाया न पडने दे अग्नि शीतल होनेपर काढ ले

असल हरताल बरफकी समान निकले तो ठीक जाने देवताकी पूजा करे हरताल परीक्षा बावन तोलेमें पाव रत्ती डाले तो सुवर्ण होय सर्वथा सत्य है ॥ ३१ ॥

पांवके पकने और दुखनेका मल्हम-गूगल १ पैसेभर, मुरदाशंख धेलेभर, गौका घी २ पैसेभर यह गरम कर उसमें यह औषधि डालकर पकावे जब मल्हम हो जाय तब दुखते वक्‌ते पैरमें लगानेसे आराम ३ दिनमें होय दिनमें यह सात बार लगावे ॥ ३२ ॥

सरसोंका तेल ऽ।। आध सेर, रूपा जस्त २ पैसेभर इसमें डालकर मिलाकर २ वा ३ पहरतक जबतक तेल रहे तबतक आंच दे चार पैसेभर तांबेकी डिब्बी बनवाय उसे स्वच्छ करके सम्भालकर उस डिब्बीमें अधेलाभर जस्तकी वटी कर खले एक डिब्बीमें चोखी आंवलासार गंधक रक्खे, उसमें पहली डिब्बीसे बुरकी दे पीछे उसमें जस्त थोडा २ डाले फिर उसपर आंवलासार बुरकावे, फिर जस्तका टुकडा डाले, फिर उसपर आवलासार गन्धक बुरकावे आवलासार गन्धक टकाभर होय, इस प्रकार तीन वार कर उसको निकाले तब उसको

डिब्बीमें रखकर ऊपरसे कपरोटीकर अरनीकी छाल आठ सेर में रखकर आग लगा दे शीतल होनेपर निकाल ले डिब्बी खोलनेपर पीला जरदा निकलेगा सोरा कलमी लेकर मूसामें सुहागा देकर गलावे टिकड़ी सोना होय लिखा भाईदास जती और चौबे धर्मचन्दका ॥

अथ हाजरांतका यन्त्र।

८	१२	९	१
॥	२	~	।=
८६	स्याह	१६	६
१४	५	४	५।

कुल्म ऊजु, वीरा विना समलकि नासहिल्ला हिनास मानसा फूल्ला वसा विवस आवा सिल पनासः।

यह मंत्र इक्कीस वार पढकर बालकके हाथमें २१ वार पढकर माथेमें फूक मारे दुहाई सुलेमान पीरकी दुहाई ख्वाजे मुहम्दीनकी खुदाके वास्ते खुदाके वास्ते फलानेके

शरीरमें होय सो मिलायके हाजिर करे इस बालकके मुखसे कहाइये बालकके फूल तेल लगावे, फूलकी माल गलेमें पहरावे पान खवावे इतर लगावे लोबानकी धूप दे कांचका शीशा धरे कोरे घडेके ऊपर सरसोंके तेलका नया दीपक बालै बालकके हाथमें यन्त्र लिखे जो पूछे सो कहै ।

पारा १ पैसेभर, आंवलासार गंधक २ पैसेभर २ पहर खरल कर फिर ४। पैसेभर भटकटैयाके रसमें खरल करे तो गुटका होय यह सत्य है ।

सरसोंका तेल ऽ॥ सेर रूपा जस्त २ पैसेभर कढाईमें दो पहरतक चढावे जबतक तेल रहे तबतक आंच दें उसके पीछे उसे उतार ले नीमके साथ घिसकर फोडेपर लगावे आराम हो ।

हलदी भांगरा अगस्तिया इनके साथ मैनसिलके दोलायंत्रमें छाग मूत्रके साथ एक पहरतक पकावै शुद्ध होनेके पीछे कांजीके साथ सब योगोंमें प्रयोग करै ।

अथ अभ्रकशुद्धि।

काला पीला श्वेत लाल अभ्रक रसायनके योग्य है। पिनाक दर्दुर नाग और वज्र यह चार भेद काले अभ्रकके हैं इनमें पिनाकादि तीन त्यागन करके वज्र अभ्रकको यत्नसे ग्रहण करे पिनाक अभ्रक आगमें डालनेसे पत्रोंको छोडता है इसके सेवनसे कुष्ठ होता है; दर्दुर, अभ्रक आगमें डालनेसे मेंढककीसी ध्वनि करता है-नाग, आगमें डालनेसे फूत्कार शब्द निकलता है और इसके खानेसे भगंदर होता है, वज्राभ्रक-अग्निमें रखनेसे कुछ भी विकारको प्राप्त नहीं होता यह व्याधि बुढापा और मृत्युनाशक है इसको फूँक जब यह अग्निकी समान हो जाय तब इसको वारंवार गौके दूधमें बुझावे फिर चौराईके रसकी आठ प्रहर भावना दे तब यह शुद्ध होता है अथवा अभ्रक २ भाग मोथा और जल २ भाग यह तीन दिन एक पात्रमें रख छोडे फिर सूक्ष्म करके पीस ले तब यह अभ्रकचूर्ण भूसी रहित जौके सहित एक पात्रमें रख काञ्जीके साथ

मर्दन करे तबतक हाथसे मलै जबतक चूर्ण हो जाय तब यह दोषरहित शुद्ध अभ्रक होता है । धान्य अभ्रकको आकके दूध वा आककी जड़के रसमें आधे दिन पुट देकर पचावे ऐसा सात बार करनेसे अभ्रक मरता है, धान्य अभ्रक १ भाग सुहागा २ भाग दोनोंको पीस मूषामें रख बन्द कर तीव्र अग्नि दे शीतल होनेपर उतार ले सब योगोंमें प्रयोग हो सक्ता है ॥

नीचे लिखा यंत्र बांधनेसे बालकके भूतादि दोष दूर होते हैं इसमें संदेह नहीं है । यंत्र यह है ॥

याफरमा ईल	२	याजबराई ल
३	१०	७
यादरदाई ल	८	यातनको फाईल

यह बीसका यंत्र और भी सब कामना देनेवाला है।

दोहा–हरिहर गणपति शारदा, देवनको शिरनाय ॥
तिलक पूर्ण किय ग्रंथको, सुजन पढहिं चितलाय ॥१॥